NEET Bulletin Helpline No.
8800265682
Completely NEET Counselling Guidance
specially for
MBBS BDS BAMS BHMS BUMS
B.Sc Nursing GNM D./ B. Pharma
BPT MPT D/BMLT D.Optometry
OT Technician Clinical Research
B.Sc Ag. Micro Bio Bio Chem
Bio tech. BNYS etc.

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
विजडम इंडिया
निर्भीक और बेबाक अभिव्यक्ति
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
EMAIL: sheelshukla100@gmail.com
लखनऊ से प्रकाशित

वर्ष: 13 अंक: 151 लखनऊ, शनिवार 13 जनवरी 2024 मूल्य: 02 रुपये पृष्ठ- 08

राम मंदिर को आडवाणी की आई पहली प्रतिक्रिया, नियति ने तय कर रखा था, पीएम हर व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करेंगे

एजेंसी।
नई दिल्ली लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा से लोगों की अभिलाषा पूरी हुई है। पीएम मोदी हर व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा अटल बिहारी वाजपेयी की कमी बेहद महसूस कर रहा हूं। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने आज राम मंदिर को लेकर अपनी पहली प्रतिक्रिया दी है। राम मंदिर आंदोलन के महारथी रहे लालकृष्ण आडवाणी ने साफ तौर पर कहा है की बहुतों ने मंदिर बनने का स्वप्न देखा था। उन्होंने कहा कि मंदिर बनना नियति ने तय किया था। अयोध्या में मंदिर अवश्य बनना था। रथ यात्रा में जन सैलाब जुड़ा हुआ था। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कई अनुभव ने जीवन को प्रभावित किया है। उन्होंने कहा कि मंदिर का स्वप्न बहुत लोगों ने देखा था। कई लोग जबरन अपनी आस्था को छिपा रहे थे। लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा से लोगों की अभिलाषा पूरी हुई है। पीएम मोदी हर व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा अटल बिहारी वाजपेयी की कमी बेहद महसूस कर रहा हूं। भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी ने इस सप्ताह घोषणा की, उन्होंने खुद को ष्सारथीष करार दिया, जिन्होंने 25 सितंबर, 1990 को गुजरात के सोमनाथ में शुरू हुई विवादास्पद श्रथयात्राश का संचालन किया था। और 6 दिसंबर, 1992 को बाबरी मस्जिद के विध्वंस के साथ समाप्त हुआ, जिसमें आडवाणी भी मौके पर मौजूद थे। मासिक पत्रिघ्का 'राष्ट्रधर्म' से बातचीत में आडवाणी ने कहा कि मैं तो मात्र एक सारथी था। भाजपा नेता ने कहा कि उस समय (सितंबर 1990 में, यंत्र शुरू होने के कुछ दिन बाद) मुझे लगा कि नियति ने तय कर लिया है कि एक दिन अयोध्या में एक भव्य राम मंदिर बनाया जाएगा... अब यह केवल समय की बात है। और, श्रथयात्राश शुरू होने के कुछ दिनों बाद, मुझे एहसास हुआ कि मैं सिर्फ एक सारथी था। मुख्य संदेश यात्रा ही थी... वह श्रथश पूजा के योग्य था क्योंकि वह भगवान राम के जन्मस्थान पर जा रहा था। आडवाणी की श्रथयात्राश, जिसका उन्होंने भाजपा के एक संवाददाता।

राम भक्तों के सत्कार को तैयार योगी सरकार, रैन बसेरे और अलाव के लिए 10 करोड़ किये जारी

लखनऊ/अयोध्या सीएम योगी का स्पष्ट निर्देश है कि अयोध्या आने वाले सभी तरह के श्रद्धालुओं का विशेष ध्यान रखा जाए। गरीब तबके के श्रद्धालुओं को ठंड और शीतलहर के दृष्टिगत प्रशासन की ओर से रहने की व्यवस्था रैन बसेरों में कराई जाए। इसके लिए रैन बसेरों की संख्या बढ़ाई जाए। अयोध्या, 12 जनवरी योगी राज में लौटे अयोध्या धाम के पौराणिक वैभव को अपनी आंखों से देखने और उसे अपने मन मस्तिष्क में उतारने के लिए देश ही नहीं विदेश के श्रद्धालु आतुर हैं। वह अपने पूर्वजों से जिस राम राज्य की गाथाओं को सुनते थे, उसके योगी सरकार में वास्तविक स्वरूप को देखने के लिए 22 जनवरी का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। ऐसे में योगी सरकार भी उनके स्वागत के लिए पुख्ता इंतजाम कर रही है। श्रद्धालुओं के रहने के लिए होटल से लेकर उनके आवागमन के लिए सुविधाओं को सुनिश्चित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी एक समीक्षा बैठक में जिला प्रशासन को अयोध्या में श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए आवश्यक दिशा–निर्देश दिये थे। सीएम योगी का स्पष्ट निर्देश है कि अयोध्या आने वाले सभी तरह के श्रद्धालुओं का विशेष ध्यान रखा जाए। गरीब तबके के श्रद्धालुओं को ठंड और शीतलहर के दृष्टिगत प्रशासन की ओर से रहने की व्यवस्था रैन बसेरों में कराई जाए। इसके लिए रैन बसेरों की संख्या बढ़ाई जाए। साथ ही अयोध्या धाम में जगह–जगह अलाव जलाने की व्यवस्था हो और जरूरतमंदों को कम्बल वितरित किया जाए। इसके लिए सरकार की ओर से अयोध्या को 10 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि जारी की गई है। पहले से व्यवस्थाओं का करें रियल्टी चेक राहत आयुक्त जीएस नवीन कुमार के अनुसार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बैठक में अयोध्या धाम आने वाले सभी श्रद्धालुओं की हर जरूरत का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी को राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या में उनके दर्शन के लिए रोजाना एक लाख से अधिक श्रद्धालु देश ही नहीं विदेश से भी आएंगे। ऐसे में उनके किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाए।

प्रधानमंत्री चाहते हैं हर वर्ग सुखी और हर नागरिक का जीवन समृद्ध हो,

एजेंसी। जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने उपरोक्त ग्राम में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि षविकसित भारत संकल्प यात्रा का मकसद किसानों, गरीबों, वंचितों और महिलाओं का उत्थान और इन्हें विकास की, उस दौड़ में शामिल करने का है, जहां वर्ष 2047 में यह देश विकसित राष्ट्र बनेगा। आज जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने ग्राम धनौरी खुर्द में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में उपस्थित लाभार्थियों से संवाद करते हुए कहे। इस मौके पर विभागों के अधिकारियों ने उपस्थित लोगों को भारत सरकार उत्तर प्रदेश सरकार से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने उपरोक्त ग्राम में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा का मकसद किसानों, गरीबों, वंचितों और महिलाओं का उत्थान और इन्हें विकास की, उस दौड़ में शामिल करने का है, जहां वर्ष 2047 में यह देश विकसित राष्ट्र बनेगा। इस कार्यक्रम में गर्भवती महिलाओं को कुपोषण किट वितरित की गई तथा शिशुओं को अन्नप्राशन भी कराया गया।

बंगाल का नाम बदलने की ममता बनर्जी ने की मांग,

एजेंसी।
पश्चिम बंगाल बममता ने कहा कि हमने पहले अपने राज्य का नाम बदलने के लिए विधानसभा में एक विधेयक पारित किया है। हमने उन्हें हर तरह का स्पष्टीकरण दिया है। लेकिन लंबे समय तक उन्होंने हमारे राज्य का नाम बदलकर बांग्ला नहीं किया। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपने राज्य का नाम बदलकर बांग्ला करना चाहती हैं। उनका तर्क है कि चूंकि पश्चिम बंगाल वर्णमाला सूची में सबसे नीचे आता है, इसलिए इसके प्रतिनिधियों को केंद्रीय बैठकों के

दौरान अंत तक इंतजार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। अपने नए आह्वान में बनर्जी ने बताया कि अतीत में भी बॉम्बे और उड़ीसा के नाम बदले गए थे और उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार से उनके प्रस्ताव पर विचार करने का आग्रह किया। ममता ने कहा कि हमने पहले अपने राज्य का नाम बदलने के लिए विधानसभा में एक विधेयक पारित किया है। हमने उन्हें हर तरह का स्पष्टीकरण दिया है। लेकिन लंबे समय तक उन्होंने हमारे राज्य का नाम बदलकर बांग्ला नहीं किया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि बॉम्बे का नाम बदलकर मुंबई, उड़ीसा का ओडिशा कर दिया गया...लेकिन हमारा क्यों नहीं बदला जा सकता? हमारी गलती क्या है। नाम बदलने से राज्य को होने वाले फायदों पर प्रकाश डालते हुए ममता ने कहा कि इससे राज्य के बच्चों को प्रतियोगिताओं में जाने पर मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के नाम में श्वेस्टश जोड़ने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि हमारे राज्य का नाम बदलकर बांग्ला कर दिया जाए तो हमारे बच्चे जो विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं और पढ़ाई के लिए जाते हैं उन्हें प्राथमिकता मिलेगी। हर बैठक में हमें अंत तक इंतजार करने के लिए मजबूर किया जाता है।ॅ, ग, ल, ं। बांग्ला का महत्व कम कर दिया गया है। पंजाब का उदाहरण देते हुए, जो भारत में एक राज्य और पाकिस्तान में एक प्रांत है, उन्होंने कहा, "हमें नहीं लगता कि जब राज्य का नाम बांग्ला है तो इसे विभाजित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। पाकिस्तान में पंजाब नाम का एक प्रांत है। भारत में भी पंजाब नाम का एक राज्य है।

श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा आयोजन के लिए स्वास्थ्य विभाग ने कसी कमर

संवाददाता।
अयोध्या सीएमओ डॉ.संजय जैन ने बताया कि विभाग द्वारा आयोजन क्षेत्र के सोलह स्थानों पर श्रीराममंदिर तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के साथ मिलकर फर्स्ट एड यूनिट बना रहा है, इस यूनिट में एक डॉक्टर, एक फार्मासिस्ट व एक वॉर्ड बॉय की मौजूदगी रहेगी। यह फर्स्ट एड यूनिट भीड़ की जगह वाले स्थानों जैसे हनुमान गुफा, साकेत पेट्रोल पंप, कनक भवन, हनुमानगढ़ी आदि स्थानों पर बनाये जाएंगे। अयोध्या। श्रीरामलला प्राण प्रतिष्ठा आयोजन के लिए स्वास्थ्य विभाग ने भी कमर कस ली है। आयोजन में आने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग की तैयारियों के बारे मे अयोध्या सीएमओ डॉ.संजय जैन

ने बताया कि विभाग द्वारा आयोजन क्षेत्र के सोलह स्थानों पर श्रीराममंदिर तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के साथ मिलकर फर्स्ट एड यूनिट बना रहा है, इस यूनिट में एक डॉक्टर, एक फार्मासिस्ट व एक वॉर्ड बॉय की मौजूदगी रहेगी। यह फर्स्ट एड यूनिट भीड़ की जगह वाले स्थानों जैसे हनुमान गुफा, साकेत पेट्रोल पंप, कनक भवन, हनुमानगढ़ी आदि स्थानों पर बनाये जाएंगे। इस यूनिट में आवश्यक जरूरी दवाएं नैबुलाइजर, ऑक्सीजन की व्यवस्था रहेगी, इसमें ब्लड शुगर की जांच भी रहेगी। इनके अलावा दो अस्पताल भी बनाये जाएंगे, जिसकी क्षमता 10 व 20 बेड की होगी। इसमें डॉक्टर्स की मौजूदगी रहेगी। इसके अलावा 40 एम्बुलेंस की भी व्यवस्था की जा रही है, जो अयोध्या क्षेत्र के अलग–अलग महत्वपूर्ण स्थानों पर खड़ी की जाएंगी। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जनपद के मेडिकल कॉलेज, श्रीराम चिकित्सालय अयोध्या, जिला अस्पताल अयोध्या, महिला जिला अस्पताल व कुमारगंज के चिकित्सालय मे 190 बेड आपातकालीन स्थिति के लिए आरक्षित रखे गये हैं। रामलला प्राण प्रतिष्ठा आयोजन के दौरान किसी भी व्यक्ति को आपात स्थिति के दौरान पहले आयोजन क्षेत्र के लिए बनाये गये दो अस्पतालों में इलाज के लिए ले जाया जायेगा, हालत ठीक न होने की स्थिति में उसे श्रीराम चिकित्सालय रेफर किया जायेगा। इसके बाद भी स्थिति ठीक न होने की दशा में मेडिकल कॉलेज और उसके बाद लखनऊ मेडिकल कॉलेज, ट्रॉमा सेंटर व राम मनोहर लोहिया अस्पताल के लिए रेफर करने की व्यवस्था की गई है।

अमेठी दौरे पर स्मृति ईरानी जन संवाद कार्यक्रम में सुनी लोगों की फरियाद, हाथों हाथ दिए समाधान के निर्देश

संवाददाता।
अमेठी। स्मृति ईरानी के साथ विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। ईरानी के जन संवाद कार्यक्रम में बिजली विभाग, आवास, चिकित्सा विभाग के साथ ही छुट्टा जानवरों की समस्या से परेशान फरियादियों की संख्या अधिक देखी गयी। केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने अपने संसदीय क्षेत्र अमेठी दौरे के दूसरे दिन शुक्रवार को जन संवाद कार्यक्रम के जरिये लोगों की समस्यायें सुनीं और उनके समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया। ईरानी ने सहजीपुरा हॉल्ट के पास प्राचीन शिव मंदिर में पहुंचकर माथा टेका और पूजा–अर्चना कर लोक कल्ध्याण की कामना की, साथ ही वहां पर मौजूद लोगों को प्रसाद भी वितरित किया। मंत्री ने अपने अमेठी दौरे के दूसरे दिन आज जरौटा, बदलापुर, बनवीरपुर, गूंजीपुर और कनू में जनसंवाद कार्यक्रम के माध्यम से लोगों की समस्याएं सुनी और संबंधित अधिकारियों को समाधान के लिए निर्देश दिये। स्मृति ईरानी के साथ विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। ईरानी के जन संवाद कार्यक्रम में बिजली विभाग, आवास, चिकित्सा विभाग के साथ ही छुट्टा जानवरों की समस्या से परेशान फरियादियों की संख्या अधिक देखी गयी। स्मृति ईरानी ने जनता को आवारा पशुओं से निजात दिलाने के लिए आश्वस्त किया और कहा कि समस्या समय सीमा के अंदर हल नहीं होती तो इसकी जानकारी जिला पंचायत अध्यक्ष राजेश अग्रहरि को दें।

शनिवार को इण्डिया गठबंधन की वर्चुअल बैठक, शामिल होंगे शीर्ष नेता

एजेंसी।
नई दिल्ली इंडिया गठबंधन के सामने वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौती संयोजक पद है। माना जा रहा है कि कल के बैठक में नीतीश कुमार को संयोजक बनने पर फैसला हो सकता है। साथ ही साथ इसकी घोषणा भी की जा सकती हैं। इसके अलावा जिन राज्यों में सीट बंटवारे को लेकर मामला बिगड़ रहा है वहां बड़े नेताओं के बीच बातचीत हो सकती है। इंडिया ब्लॉक ने शनिवार को 11रू30 बजे एक बैठक निर्धारित की है। इस ऑनलाइन बैठक में नीतीश कुमार को समन्वयक नियुक्त किया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक इस वर्चुअल बैठक में प्छक्प्। गठबंधन के 14 दलों के शीर्ष नेता शामिल होंगे। हालांकि इससे पहले दो बार ऑनलाइन बैठक को रद्द किया जा चुका है। पिछले सप्ताह भी इंडिया गठबंधन के नेताओं की ऑनलाइन बैठक होने वाली थी। शनिवार को यह ऑनलाइन बैठक ऐसे समय में बुलाई गई है जब कांग्रेस तमाम क्षेत्रीय दलों के साथ सीट बंटवारे को लेकर मंथन कर रही है। इंडिया गठबंधन के सामने वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौती संयोजक पद है। माना जा रहा है कि कल के बैठक में नीतीश कुमार को संयोजक बनने पर फैसला हो सकता है। साथ ही साथ इसकी घोषणा भी की जा सकती हैं। इसके अलावा जिन राज्यों में सीट बंटवारे को लेकर मामला बिगड़ रहा है वहां बड़े नेताओं के बीच बातचीत हो सकती है। पश्चिम बंगाल में गठबंधन के लिए कांग्रेस को दो लोकसभा सीटों की पेशकश करने वाली तृणमूल कांग्रेस ने बाद की राष्ट्रीय गठबंधन समिति के साथ आगे

की बातचीत से इनकार कर दिया है, लेकिन दोनों दलों के शीर्ष नेताओं के बीच बातचीत के लिए दरवाजा खुला रखा है। कांग्रेस के गठबंधन पैनल के एक सदस्य के अनुसार, टीएमसी द्वारा दी गई दोनों सीटें पहले से ही कांग्रेस के पास हैं, जिससे पार्टी के लिए समझौते को स्वीकार करना मुश्किल हो गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, टीएमसी ने मेघालय में भी एक सीट का अनुरोध किया है और दावा किया है कि पिछले विधानसभा चुनाव में उसे 13.8: वोट मिले थे, जो कांग्रेस से थोड़ा अधिक है। कांग्रेस के दिग्गज नेता मुकुल वासनिक के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय गठबंधन समिति पहले ही सीटों पर चर्चा के लिए जनता दल (यूनाइटेड), राष्ट्रीय जनता दल, आम आदमी पार्टी, शिव सेना (उद्धव), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और समाजवादी पार्टी के साथ बैठक कर चुकी है।

हर साल खर्च होते हैं 200 करोड़ रुपये, इसलिए स्वछता में आगे रहता है इंदौर शहर

एजेंसी।
इंदौर नगर निगम के एक अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि स्थानीय लोगों से कचरा संग्रहण शुल्क और जुर्माने की वसूली के साथ ही अन्य स्रोतों से इतनी ही राशि सरकारी खजाने में डालने की कोशिश की जा रही है, ताकि स्वच्छता के इस मॉडल को आर्थिक रूप से टिकाऊ बनाया जा सके।इंदौर। राष्ट्रीय स्वच्छता सर्वेक्षण में लगातार सातवीं बार अव्वल रहे मध्यप्रदेश के इंदौर में शहरी निकाय की ओर से कचरा प्रबंधन पर हर साल करीब 200 करोड़ रुपये खर्च किए जाते हैं। निगम के एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। इंदौर नगर निगम (आईएमसी) के एक अधिकारी ने शुक्रवार को बताया कि स्थानीय लोगों से कचरा संग्रहण शुल्क और जुर्माने की वसूली के साथ ही अन्य स्रोतों से इतनी ही राशि सरकारी खजाने में डालने की कोशिश की जा रही है, ताकि स्वच्छता के इस मॉडल को आर्थिक रूप से टिकाऊ बनाया जा सके। "वेस्ट टू वेल्थ" की थीम पर केंद्रित वर्ष 2023 के स्वच्छता सर्वेक्षण में अलग–अलग श्रेणियों में देश के 4,400 से ज्यादा शहरों के बीच कड़ी टक्कर थी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की मौजूदगी में दिल्ली में बृहस्पतिवार को आयोजित कार्यक्रम में इंदौर को सूरत के साथ देश का सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया गया। अधिकारी ने बताया, हम शहर में अपशिष्ट प्रबंधन पर हर साल करीब 200 करोड़ रुपये खर्च कर रहे हैं। हम कचरे से कमाई की अलग–अलग मदों में इतनी ही रकम सरकारी खजाने में डालने की कोशिश कर रहे हैं।

सरकारी प्रतिबंधों के बाद कांग्रेस ने मणिपुर में भारत न्याय यात्रा स्थल बदला, इबोबी ने देरी के लिए रणनीति अपनाने का आरोप लगाया

एजेंसी। मणिपुर के पूर्व मुख्यमंत्री ओ इबोबी ने आरोप लगाया कि एन बीरेन सिंह के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ सरकार ने यात्रा में देरी करने के लिए श्रणनीतिश अपनाई। इबोबी ने कहा कि मणिपुर प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एमपीसीसी) के प्रमुख के मेघचंद्र ने 2 जनवरी को सुरक्षा मंजूरी मांगी थी लेकिन राज्य के गृह विभाग ने स्पष्ट निर्देश नहीं दिया। कांग्रेस ने शुक्रवार को घोषणा की कि मणिपुर में राहुल गांधी के नेतृत्व वाले मार्च, श्भारत जोड़ो न्याय यात्राश का स्थान बदल दिया गया है। यात्रा 14 जनवरी को मणिपुर से शुरू होने वाली है। यात्रा, जिसे पहले इंफाल के हप्ता कांगजेइबुंग से शुरू करने की योजना थी, अब थौबल जिले के खोंगजोम गांव में आयोजित की जाएगी। मणिपुर के पूर्व मुख्यमंत्री ओ इबोबी ने आरोप लगाया कि एन बीरेन सिंह के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ सरकार ने यात्रा में देरी करने के लिए श्रणनीतिश अपनाई। इबोबी ने कहा कि मणिपुर प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एमपीसीसी) के प्रमुख के मेघचंद्र ने 2 जनवरी को सुरक्षा मंजूरी मांगी थी लेकिन राज्य के गृह विभाग ने स्पष्ट निर्देश नहीं दिया।एआईसीसी के मणिपुर प्रभारी गिरीश चोडनकर ने भी कहा कि राज्य सरकार यात्रा को लेकर श्घबराई हुईश है और कहा कि वह राहुल गांधी से श्डरी हुईश है। कई दिनों तक यात्रा के लिए जमीनी मंजूरी नहीं देने के बाद, राज्य सरकार ने 10 जनवरी को कांग्रेस को कुछ शर्तों के साथ रैली आयोजित करने की अनुमति दी। मणिपुर के संयुक्त सचिव, गृह ने इंफाल पूर्वी जिले के मजिस्ट्रेट को केवल सीमित संख्या में प्रतिभागियों के साथ यात्रा की अनुमति देने का निर्देश दिया था। निर्देश में कहा गया है कि रैली शुरू होने से पहले प्रतिभागियों के नाम पहले ही ले लिए जाने चाहिए। गिरीश चोडनकर ने कहा कि गृह विभाग ने प्रतिभागियों की संख्या के बारे में कई अधिसूचनाएँ जारी कीं जिन्हें अनुमति दी जाएगी। चोडनकर ने दावा किया, षविभाग ने एक समय कहा कि 1,000 प्रतिभागियों को अनुमति दी जाएगी और दूसरे बिंदु पर, उसने

बुन्देलखण्ड को पर्यटन गतिविधियों से जोड़कर इसका पिछड़ापन दूर करने का हरसंभव प्रयास किया जायेगा–जयवीर सिंह

23 जनवरी से 18 फरवरी तक बुन्देलखण्ड के 07 जनपदों में पर्यटन से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जायेगा

संवाददाता।

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि आगामी 23 जनवरी से 18 फरवरी, 2024 तक बुन्देलखण्ड गौरव महोत्सव का आयोजन बुन्देलखण्ड के 07 जनपदों में किया जायेगा। इसके तहत विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पर्यटकों एवं सैलानियों को बुन्देलखण्ड के लगभग सभी जनपदों में मौजूद ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पौराणिक महत्व के स्थलों के बारे में जानकारी दी जायेगी। इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय स्तर पर रोजगार के साधन भी सृजित होंगे। उन्होंने कहा कि बुन्देलखण्ड के पिछड़ेपन को दूर करने में पर्यटन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होगी, क्योंकि एक पर्यटक कम से कम 06 लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है।पर्यटन मंत्री आज पर्यटन भवन के सभागार में बुन्देलखण्ड गौरव महोत्सव की रूपरेखा एवं इससे संबंधित ''लोगो'' के अनावरण के अवसर पर प्रेस प्रतिनिधियों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि 23 जनवरी से शुरू हो रहे 16 दिवसीय बुन्देलखण्ड गौरव महोत्सव के तहत झांसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, चित्रकूट तथा बांदा में विभिन्न कार्यक्रम एवं हेरीटेज वॉक का आयोजन किया जायेगा। यह कार्यक्रम 23 जनवरी को झांसी के किले से शुरू होकर 18 फरवरी को बांदा जनपद के कलिंजर फोर्ट में समाप्त होगा। जयवीर सिंह ने बताया कि बुन्देलखण्ड अपने गौरवशाली इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक इमारतों और प्राकृतिक सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। हर जिले की अपनी अलग पहचान, भेष–भूषा, खान–पान तथा सांस्कृतिक विविधता है। इस कार्यक्रम के दौरान यहां की विविधता को पूरे विश्व से परिचित कराने का प्रयास किया जायेगा। उन्होंने कहा कि बुन्देलखण्ड में लगभग 34 किले गढ़ी तथा ऐतिहासिक इमारतें हैं। पर्यटन विभाग राजस्थान प्रदेश की तर्ज पर इनका पुनर्रोद्धार और सौन्दर्यीकरण करके पीपीपी मोड पर संचालित कराना चाहता है। फिलहाल बरूआ सागर तथा चुनार के किलों के फाइनल बिड खोली गयी है। मध्य प्रदेश में स्थित बुन्देलखण्ड की तरह ही उ0प्र0 में स्थित बुन्देलखण्ड का विकास किया जायेगा।श्री जयवीर सिंह ने कहा कि स्थानीय जनजीवन को आर्थिक गतिविधियों से जोड़कर बुन्देलखण्ड का पिछड़ापन दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। भविष्य में बुन्देलखण्ड उ0प्र0 के ग्रोथ इंजन के रूप में कार्य करेगा। मीडिया एवं सोशल मीडिया की बुन्देलखण्ड को पिछड़ेपन के कुचक्र से निकालने में ब्राण्डिंग एवं मार्केटिंग के रूप में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि बुन्देलखण्ड एक्सप्रेसवे के लोकार्पण के समय मा0 प्रधानमंत्री जी बुन्देलखण्ड के गौरवशाली इतिहास एवं किलो को पुनर्जीवित करके आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने का जिक्र किया था। पर्यटन विभाग इस दिशा में तेजी से कार्यवाही कर रहा है। इस अवसर पर प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति एवं धर्मार्थ कार्य मुकेश मेश्राम ने बुन्देलखण्ड गौरव महोत्सव की जानकारी देते हुए बताया कि बुन्देलखण्ड के हर जिले में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व के स्थल मौजूद हैं। झांसी की रानी से लेकर आल्हा ऊदल की गौरव गाथा के बिना बुन्देलखण्ड अधूरा है। 16 दिवसीय समारोह की श्रृंखला में बुन्देलखण्ड को विश्व स्तरीय पर्यटन से जोड़ने का प्रयास किया जायेगा। इसके अलावा देशी–विदेशी ब्लागर एवं इन्फ्लूएन्सर के माध्यम से इस क्षेत्र का प्रचार प्रसार कराया जायेगा।

यातायात नियमों के प्रति किया जागरूक

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्रों ने लिया भाग

संवाददाता।

लखनऊ । स्वामी विवेकानन्द के जन्मदिवस पर पीएमओ द्वारा युवा दिवस अटल बिहारी बाजपेई नगर निगम डिग्री कॉलेज में मनाया। जिसमें पुलिस उपायुक्त यातायात के निर्देशन में जिला युवा कल्याण अधिकारी के सहयोग से राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा सप्ताह के अंतर्गत नेहरू युवा केन्द्र संगठन के द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भूतपूर्व उप मुख्यमंत्री दिनेश शर्मा थे। इस कार्यक्रम में ट्रैफिक की तरफ से वीसिष्ठ अतिथि उप निरीक्षक यातायात टीपी लाइन रीडर विकास सिंह संगठन के पदाधिकारी संतोष कुमार भारती और प्राचार्य सुभाष पाण्डेय कोऑर्डिनेटर डॉ उपेन्दर कुमार और छात्र एवं छात्रा उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुख्य प्रशिक्षक के रुप में ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क के सेफ्टी मैनेजर सुमित मिश्रा ने सायकिल, दो पहिया तथा चार पहिया वाहन चलाते समय सावधानियों के बारे में जानकारी दी। सड़क चिन्ह, ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करना, हेल्मेट का सही उपयोग, दो पहिया वाहन चलाते समय गति पर नियंत्रण रखने और वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग न करने के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम में लगभग 250 छात्रों ने भाग लिया। दूसरी तरफ नेहरू युवा केन्द्र संगठन के द्वारा ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क में छात्र छात्राओं के लिए के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि उप निरीक्षक यातायात काकोरी राहुल वर्मा और, उप निरीक्षक यातायात टीपी लाइन रीडर विकास सिंह संगठन के पदाधिकारी संतोष कुमार भारती और लगभग 20 स्कूल के कोऑर्डिनेटर और छात्र एवं छात्रा उपस्थित थे । कार्यक्रम में मुख्य प्रशिक्षक के रुप में ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क के सेफ्टी मैनेजर सुमित मिश्रा ने साइकिल, दो पहिया तथा चार पहिया वाहन चलाते समय सावधानियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में लगभग 350 छात्रों ने भाग लिया। जिनको सड़क सुरक्षा सम्बन्धी शपथ दिलाया गया एवं पार्क से छात्रों द्वारा पैदल सड़क सुरक्षा रैली निकाली गई। नेहरू युवा केन्द्र संगठन के द्वारा एस आर ग्रुप आफ इंस्टीट्यूट, सीतापुर रोड, लखनऊ के छात्र छात्राओं के लिए के लिए राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा सप्ताह के अन्तर्गत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में स्वामी को माल्यार्पण कर प्रारंभ किया गया। जिसमें राज्य सभा सांसद बाबू राम निषाद, पूर्व मंत्री कुमार अशोक पाण्डे, दुर्गेश त्रिपाठी– राष्ट्रीय अध्यक्ष एकल अभियान, पियूष चौहान– वायस चेयरमैन एस आर ग्रुप आफ इंस्टीट्यूट, विकास सिंह– जिला युवा अधिकारी, लखनऊ तथा मारुति सुजुकी के रोड सेफ्टी कार्डिनेटर सैय्यद एहतेशाम शामिल हुए। कार्यक्रम में लगभग 500 छात्रों ने भाग लिया।

करोड़ों की ठगी करने वाले गिरोह का भंडाफोड़,

टेक्निकल हेड सहित 25 गिरफ्तार

ह्वाला के माध्यम से पैसा भेजने का करते थे काम
एसटीएफ को काफी दिनों से मिल रही थी शिकायत
गलत पते पर संचालित की जा रही थी कंपनी

संवाददाता।

लखनऊ । एसटीएफ यूपी को एसडीटी एक्जि"म ओवरसीज प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी की आड़ में विदेशों से वीओआइपी कॉल, टीएफएन सॉफ्ट फोन के माध्यम से कम्प्यूटर व लैपटाप को रिमोट पर लेकर करोड़ो रुपए की ठगी करने वाले संगठित गिरोह के टेक्निकल हेड सहित 25 अभियुक्त को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त हुई। इनके कब्जे से 22 सीपीयू , 22 डेस्कटॉप मॉनिटर, 22 हेड फोन ,22–22 कीबोर्ड माउस,34 मोबाइल फोन, आठ एटीएम कार्ड, पांच आधार कार्ड, तीन पैन कार्ड, तीन ड्राइविंग लाइसेंस,तीन कार रजिस्ट्रेशन कार्ड, एक दिल्ली मेट्रो कार्ड, एक हेल्थ कार्ड,तीन कार, एक जिप्सी कार, चार लैपटॉप , चार इंटरनेट राऊटर, दो हिसाब किताब रजिस्टर,22,222–00 रुपये नगद बरामद किया है। गिरफ्तार अभियुक्त का जयन्त उर्फ जितेन्द्र उर्फ उस्मान, मानिक सिवाच, मोहम्मद शाबिर, शिवा कश्यप, मोहित ग्रोयर,आदिल रिजवी, दिव्यम शर्मा, रितिक मल्होत्रा, सक्षम मल्होत्रा,हिमांशु भारद्वाज,रोहित यादव,अंकुर सोनी, कैलाश शाही, फिरोज ग्रोवर,भुपेन्द्र सिंह यादव,आफरोज खान,युधिष्ठिर कुमार, मनीष तिवारी,गौतम सहगल,यश मक्कड़, अनुभाव त्यागी,संजीत,चिन्टू उर्फ चन्द्रपाल,नीरज,नदीम आदि है। एसटीएफ उत्तर प्रदेश को विगत काफी समय से वीओआइपी कॉलिंगकर विदेशों (अमेरिका, कनाडा, शिकागो, कैलीफोर्निया, लेबनन, हांगकांग, ब्रिटेन आदि) से करोड़ों रुपए की ठगी करने वाले संगठित गिरोह के सक्रिय होने की सचूनाएं प्राप्त हो रही थी। इस सम्बन्ध में एसटीएफ यूपी की विभिन्न टीमों व इकाईयों को आवश्यक कार्रवई के लिए निर्देशित किया गया था। जिसके क्रम में एसटीएफ की टीम ने नोएडा से एक फर्जी इंटरनेशनल काल सेंटर का भंडाफोड़ कर उपरोक्तसंगठित गिरोह के टेक्निकल हेड सहित उपरोक्त अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में गिरोह के टेक्निकल हेड नीरज यादव ने बताया कि मैं अपने साथी संजीत, दिव्यम शर्मा, मोहित आदिल रिजवी आदि के साथ यह फर्जी काल सेन्टर चला रहा है। जिसका मालिक शाजिद सहिदी है। जिसमें हमारे द्वारा विदेशी लोगों को काल की व रिसीव की जाती है। काल से सम्बन्धित सभी इलेक्ट्रानिक उपकरण, मोबाइल, सिम शाजिद शहीदी द्वारा हमे उपलब्ध कराया गया है। शाजिद द्वारा कम्पनी को मकान नंबर. 128 बी वन प्रथम फ्लोर मौहम्मदपुर, आरके पुरम नियर एमसीडी पार्क नई दिल्ली पर रजिस्टर्ड करा रखा है। उसके द्वारा फर्जीवाड़ा करवाये जाने के उद्देश्य से ही कम्पनी गलत पते पर संचालित की जा रही है। जिससे कोई भी वास्तविक पता न खोज सके। यह कॉल विदेश से टीएफएन पोर्टल के माध्यम से आईबीम साफ्टवेयर से हमारे कॉल सेंटर में लगे सिस्टम पर लैण्ड करायी जाती है। उस कॉल को हमारे कॉल सेंटर पर पूर्व से एक्टिव कॉलर कॉल रिसीव करते है तथा अपने आप को विदेशी कम्पनी का प्रतिनिधि प्रदर्शित करते हुए उनकी समस्या का जल्द समाधान का आश्वासन देते है तथा हमारी कम्पनी में

काम करने वाले कर्मचारी उन लोगों को बोलते है कि आपका सिस्टम हैक तथा आईपी एड्रेस कम्प्रोमाईज्ड हो गया है। इस समस्या के समाधान के लिए हम उनके सिस्टम को ऐनीडेस्क साफ्टवेयर से कनेक्ट कर उनके सिस्टम मे आ रही असुविधा को हल करने के नाम पर चार्ज के लिए विभिन्न कम्पनी के गिफ्ट कार्ड 100–500 डालर कीमत के लेते हैं। साथ ही इस धोखाधड़ी के दौरान हम लोग यूएस के लोगों के मोबाइल को एनीडेस्क से कनेक्ट कर मैजिक ऐप गूगल वाइस आदि एप पर यूएस के लोगों से पैमेंट कराकर एकाउंट बना लेते है और उनके मोबाइल से उस अकाउंट को लॉग आउट कर अपने मोबाइल पर लॉगिन कर लेते है। फिर इन ऐप का उपयोग हम अपनी जरूरत अनुसार यूएस के लोगों को डायरेक्ट कॉल करने के काम में लेते है। साथ ही यह भी बताया कि ठगी से प्राप्त कूपनों एवं बीटीसी को कैश कराने के लिए विदेश के खातों में भेजते है, जिस पर ऐसी सुविधा देने वाले लोग अपना कमिशन काटकर हवाला के माध्यम से इन लोगों को पैसा वापस भेज देते है। गिरोह के बैंक खातों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर बैंक खातों को फीज कराने व अन्य ट्राजेक्शन के सम्बन्ध में साक्ष्य संकलन किया जा रहा है।उपरोक्त गिरफ्तार अभियुक्तों के विरूद्ध थाना सेक्टर–58 नोएडा में मुकदमा दर्ज कराया गया है।

पूर्वांचल विकास निधि के अंतर्गत गोण्डा की 08 परियोजनाओं हेतु 1154.23 लाख रुपये अवमुक्त

लखनऊ । प्रदेश सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष 2023–24 में पूर्वांचल विकास निधि के अन्तर्गत जनपद गोण्डा की 08 परियोजनाओं के क्रियान्वयन हेतु 1154.23 लाख रुपये अवमुक्त किये हैं। अवमुक्त की गई धनराशि मुख्य विकास अधिकारी, गोण्डा के निवर्तन पर रखी गयी है। नियोजन विभाग ने इस संबंध में आवश्यक आदेश जारी कर दिये हैं। आदेशानुसार ठठकउवा पक्की सड़क से ब्रम्हबाबा स्थान होते हुए महापुरवा तक सम्पर्क मार्ग हेतु 101.33 लाख रुपये, रेरूआ सूदेवीर बाबा के सामने रोड से हुलासपुरवा होते हुये राधा नगर रूपीपुरवा से कंधईपुरवा रोड तक सम्पर्क मार्ग हेतु 143.89 लाख रुपये, इटियाथोक खरगूपुर मार्ग से चौरी परिहार मार्ग से चौरी परिहार कोरियनपुरवा, चर्मुभुजपुरवा, महेशपुर, मिश्रनपुरवा होते हुये भवनियापुर महराजगंज मार्ग तक सम्पर्क मार्ग हेतु 312.14 लाख रुपये तथा बिहुरी महेशभारी मुख्य मार्ग से सोमरही गोविन्दपुर गोपालपुर खालसा गोपलपुर माफी खपड़ाडीह लालपुर जोलहनडीह सम्पर्क मार्ग हेतु 157.17 लाख रुपये अवमुक्त किये गये हैं। इसी प्रकार गोण्डा जिले के ग्राम सभा छावनी सरकार जेलरोड गोण्डा तक सम्पर्क मार्ग हेतु 64.92 लाख रुपये, गोण्डा बेलसर किमी0 14 से प्राथमिक उच्च विद्यालय चिरेबसना होते हुये रामदीनपुरवा, धरूकनपुरवा हिलालपुर सम्पर्क मार्ग हेतु 96.81 लाख रुपये, उत्तरी भवानी मार्ग से बरौली परवारपुरवा अहिरनपुरवा, बनुआ बरौली तक सम्पर्क मार्ग हेतु 109.59 लाख रुपये तथा रायपुर हनुमान मंदिर से रामपाल पुरवा बहुबन, पश्चिमी स्कूल तक सम्पर्क मार्ग हेतु 168.38 लाख रुपया अवमुक्त किये गये हैं।

छोटी सी उम्र में दुनिया को बड़ा संदेश दे गए स्वामी विवेकानंद– अखिलेश यादव

लखनऊ । समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने आज समाजवादी पार्टी राज्य मुख्यालय 19 विक्रमादित्य मार्ग पर महान आध्यात्मिक गुरू और युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद की जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर कहा कि स्वामी विवेकानंद ने बहुत कम समय में दुनिया में बहुत बड़ा संदेश दिया और अपने विचारों से लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का काम किया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद से पूरी दुनिया प्रेरणा लेती है। शिकागो में दिया गया उनका भाषण बहुत महत्वपूर्ण था, सभी लोग उसे आज भी याद करते हैं। दुनिया भर के लेखकों, चिंतकों ने शिकागो में दिए गए उनके भाषण के बारे में लिखा है। विवेकानंद जी भारत की संस्कृति, परंपरा और सभ्यता के बारे में जो संदेश दिया उसका दूसरा उदाहरण कहीं नहीं मिलता है। उन्होंने समाज को दिशा दी

और बताया कि गरीबों, कमजोरों और मानव की सेवा सबसे बड़ी सेवा है। कहा कि स्वामी विवेकानंद ने पूरी दुनिया को एकता और मानवता का संदेश दिया है। आज स्वामी विवेकानंद के रास्ते पर चलने और उनका अनुकरण करने का संकल्प लेने का दिन है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने जो रास्ता अपनाया है, वह देश को बांटने का है। भाजपा भेदभाव करती है और समाज में नफरत फैलाती है। पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी को पूरी दुनिया में प्रशंसा मिली। शायद ही कोई ऐसा महापुरुष हुआ हो जिसको दुनिया में इतनी प्रशंसा मिली हो। उन्होंने भारतीय समाज में जो विषमताएं थी, उसे दूर करने का प्रयास किया। पूरे विश्व में भारत का नाम ऊंचा किया। उन्होंने नर की पूजा को ही नारायण की पूजा माना। अखिलेश यादव ने इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता श्री दीपक कबीर द्वारा तैयार किए गए समाजवादी कैलेंडर और समाजवादी पार्टी के नेता एवं चेयरमैन नदीम फारुकी की पुस्तक संघर्ष के 5 साल और सोशल वर्कर बबलू बिंद द्वारा कैंसर बीमारी पर लिखित पुस्तक ''मां की प्रेरणा एवं समाजवादी विजन कैंसर एवं अन्य गंभीर रोगों से ग्रसित व्यक्तियों की सेवा का सफर'' का विमोचन किया। अखिलेश यादव ने पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता दीपक कबीर और हिमांशु को हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी समाजवादी कैलेंडर बनाने के लिए धन्यवाद देते हुए बधाई दी। उन्होंने कहा कि इससे समाजवादी विचारधारा आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। लोगों को समाजवादी पार्टी की नीतियों कार्यक्रमों और विचारधारा के बारे में जानने में मदद मिलेगी।

पीएम कुसुम योजना में मिलती रहेगी 60 प्रतिशत सब्सिडी

संवाददाता।

लखनऊ । प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (पीएम कुसुम) योजना के अंतर्गत निविदा मूल्य बेंचमार्क मूल्य से अधिक होने एवं केन्द्र सरकार द्वारा बेंचमार्क मूल्य पर ही अनुदान दिए जाने के फल स्वरुप कृषकों के हित में निविदा मूल्य पर 60 प्रतिशत अनुदान पर कृषकों के प्रक्षेत्रों पर सोलर पम्पों की स्थापना के लिए मा० मंत्री परिषद द्वारा 168.63 करोड़ रुपए की अतिरिक्त धनराशि का टॉप अप अनुमोदन किया गया। सोलर पम्प के कच्चे माल (रॉ मटेरियल) के मूल्य में वृद्धि होने के फल स्वरुप सोलर पैनल गत वर्ष के टेंडर मूल्य में 18 से 20 प्रतिशत की वृद्धि हो गई थी। इसके फलस्वरुप किसानों पर कृषक अंश के भार की बढ़ोतरी हो रही थी, योजना के लोकप्रियता को दृष्टिगत रखते हुए प्रदेश सरकार के द्वारा सोलर पम्प के मूल्य पर कृषकों को 60: अनुदान अनुमन्य कराए जाने हेतु अतिरिक्त मूल्य को राज्य सरकार के अंश से टॉप अप किए जाने के लिए वर्ष 2023–24 हेतु रूपए 68.29 करोड़ एवं वर्ष 2024–25 के लिए रूपये 100.34 करोड़ इस प्रकार कुल 168.63 करोड़ रुपए के अतिरिक्त धनराशि माननीय मंत्री परिषद द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है। कृषकों के प्रक्षेत्र पर सोलर पम्पों की स्थापना कराये जाने से डीजल एवं बिजली की बचत तथा राष्ट्रीय स्तर पर कार्बन की तीव्रता में भी कमी आएगी। वर्ष 23–24 में 30000 सोलर पम्प तथा वर्ष 2024–25 में 44250 सोलर पम्प, इस प्रकार कुल 74250 सोलर सिंचाई पम्पों की स्थापना कराई जाएगी। इन सोलर पम्पों के स्थापना पर क्रमशः वर्ष 2023–24 में 285.39 करोड़ तथा वर्ष 2024–25 में रुपया 406.564 करोड़ इस प्रकार कुल रुपया 691.9540 करोड़ रुपए का व्यय प्रदेश सरकार के द्वारा किया जाएगा।

गाड़ी हटाने को लेकर फायरिंग, दो घायल

संवाददाता। लखनऊ । राजधानी के ठाकुरगंज इलाके में घर के बाहर गाड़ी खड़ी करने को लेकर दो पक्षों में विवाद के बाद फायरिंग हो गई। इससे क्षेत्र में अफरा तफरी मच गयी। फायरिंग में भाई–बहन गोली लगने से घायल हो गए। दोनों को पुलिस ने ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया है। वहीं आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। माहौल खराब देखते हुए इलाके में पुलिस फोर्स तैनात कर दी गई है।सागर कनौजिया पुत्र हरी प्रसाद निवासी–दौलतगंज निकट प्रभा देवी मन्दिर ने थाना ठाकुरगंज पर सूचना दिया कि शुक्रवार को समय नौ बजे सुबह के आस–पास उसके घर के सामने रहने वाले मनोज मिश्रा पुत्र स्व. सत्य प्रकाश मिश्रा सुबह अपनी कार निकालने के लिए आये। इसकी वादी की गाड़ी काफी दूर पर थी, फिर भी मनोज उपरोक्त ने वादी से कहा कि अपनी गाड़ी किनारे कर लो तो वादी के भाई विशाल ने कहा कि ठीक है किनारे कर रहे हैं आप अपनी गैराज खोलिए हम कार को हटा रहे हैं। इसी बात पर मनोज मिश्रा उपरोक्त आवेश में आकर असलहे से तीन राउन्ड गोली चला दी। जिससे वादी के भाई मोनू उम्र करीब 32 वर्ष के कमर व बहन मानशी उम्र करीब 20 वर्ष के बायें जांघ में गोली लगी जिनका इलाज ट्रामा सेंटर में चल रहा है। इससे पूर्व भी मनोज उपरोक्त वादी को जान से मारने की धमकी दे चुका है। इस सूचना पर थाना ठाकुरगंज पुलिस ने मौके पहुंचकर मामले को शांत कराया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया फायरिंग करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। दूसरी तरफ गुडंबा थानाक्षेत्र में 9 जनवरी की रात रास्ते के विवाद को लेकर दंबगों ने एक युवक को लाठी,डंडे व राड से जमकर पिटाई की थी। पुलिस ने इस मामले में दो को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है।

फांसी लगाकर युवक ने दी जान

लखनऊ । राजधानी के थाना पीजीआई क्षेत्र में युवक ने फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला को समाप्त कर लिया। सूचना मिलते ही पुलिस ने पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया। बुधवार की रात्रि करीब बारह बजे जरिये आरटी सेट थाना स्थानीय पर सूचना प्राप्त हुयी कि कुलदीप कुमार उर्फ नीरज उम्र करीब 35 वर्ष पुत्र ठाकुर प्रसाद निवासी ग्राम सराय पोस्ट बंसरिया, थाना बीघापुर जनपद उन्नाव हालपता–तेलीबाग चरणबट्टा मधुवन विहार कालोनी थाना पीजीआई ने अपने आवास पर सीढ़ियों पर लगी लोहे की रेलिंग से गमछे का फंदा बनाकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया है। इस सूचना पर थाना पीजीआई द्वारा आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की गई। मृतक के एक पुत्र है। मृतक पंजाब में आर्मी मेडिकल कोर में नियुक्त था।

खाद्यान्न का निःशुल्क वितरण 25 जनवरी, 2024 तक

संवाददाता। लखनऊ । प्रदेश के अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 के अन्तर्गत माह जनवरी, 2024 के सापेक्ष आवंटित खाद्यान्न का निःशुल्क वितरण 25 जनवरी, 2024 तक वितरण सुनिश्चित कराया जाएगा। बाजरा वितरण हेतु चयनित जनपदों को छोड़कर अन्त्योदय कार्डधारकों को 14 किग्रा0 गेहूं तथा 21 किग्रा0 चावल (35 किग्रा० खाद्यान्न) प्रति कार्ड तथा पात्र गृहस्थी राशन कार्डों से सम्बद्ध यूनिटों पर 02 किग्रा0 गेहूं व 03 किग्रा0 चावल (05 किग्रा खाद्यान्न) प्रति यूनिट के आधार पर निःशुल्क वितरण लाभार्थियों में किया जा रहा है। खाद्य एवं रसद विभाग द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार बाजरा वितरण के लिए चयनित 16 जनपदों यथा–अलीगढ़, एटा, कासगंज, हाथरस, आगरा, फिरोजाबाद, मथुरा, मैनपुरी, इटावा, औरैया, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, फर्रूखाबाद, बदायूं तथा संभल में बाजरा का वितरण कराया जा रहा है। इन जनपदों में प्रत्येक अन्त्योदय कार्डधारकों को 14 किग्रा0 गेहूं तथा 20 किग्रा0 चावल तथा 01 किग्रा0 बाजरा (35 किग्रा० खाद्यान्न) और पात्र गृहस्थी लाभार्थियों को प्रत्येक यूनिट पर 02 किग्रा0 गेहूं व 02 किग्रा0 चावल तथा 01 किग्रा0 बाजरा (कुल 05 किग्रा) का निःशुल्क वितरण लाभार्थियों में सुनिश्चित कराया जायेगा। उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार द्वारा योजना के अर्न्तगत आच्छादित गरीब लाभार्थियों के आर्थिक बोझ को कम करने तथा राष्ट्रीय एकरूपता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, एन0एफ0एस0ए0 में आच्छादित अन्त्योदय तथा पात्र गृहस्थी लाभार्थियों को, 01 जनवरी, 2024 से पाँच वर्ष हेत निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराये जाने का निर्णय लिया गया है।

11 नवीन गौ संरक्षण केन्द्रों के निर्माण हेतु 08 करोड़ 80 लाख रूपये स्वीकृत

संवाददाता।

लखनऊ । उत्तर प्रदेश सरकार ने निराश्रित गौवंश के संरक्षण एवं संवर्धन के लिये प्रदेश में 11 नवीन गौ संरक्षण केन्द्रों के निर्माण हेतु प्रथम किश्त के रूप में 08 करोड़ 80 लाख रूपये की धनराशि वर्तमान वित्तीय वर्ष में स्वीकृत की है। प्रत्येक केन्द्र के निर्माण हेतु 80 लाख रूपये की धनराशि का प्रावधान किया गया है।इस संबंध में पशुधन विभाग द्वारा शासनादेश जारी करते हुये निदेशक प्रशासन एवं विकास, पशुपालन विभाग को आवश्यक दिशा–निर्देश जारी कर दिये गये है।

शासनादेश के अनुसार 11 नवीन गौ संरक्षण केन्द्र की स्थापना बस्ती के ग्रा0 नारायणपुर एवं ग्रा0 सिकटा, तह0 हरैया, हमीरपुर के ग्रा0 मंगरौठ, तह0 सरीला, मुरादाबाद के ग्रा0 फाजलपुर, गाजीपुर के ग्रा0 कुसेहरा, तह0 सदर, जौनपुर के ग्रा0 बल्लीपुर महथिया, तह0 मडियाहूं, ललितपुर के ग्रा0 बानपुर, तह0 महरौनी, बिजनौर के ग्रा0 याकूबपुर तह0 धामपुर, देवरिया के ग्रा0 घूघा, तह0 बरहज, एवं ग्रा0 सेमरी में तथा बांदा के ग्रा0 मलहेरा नेवादा तह0 नरैनी में की जायेगी।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, शनिवार 13 जनवरी 2024
sheelshukla100@gmail.com

वन्यजीव संरक्षण की अनूठी पहल की सी.एम.एस. छात्र दर्श अग्रवाल ने

लखनऊ, 12 जनवरी। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, गोमती नगर द्वितीय कैम्पस के इण्टरनेशनल कैम्ब्रिज सेक्शन के कक्षा–5 के प्रतिभाशाली छात्र दर्श अग्रवाल ने वन्यजीव संरक्षण की अनूठी पहल कर जनमानस को खासकर किशोर व युवा पीढ़ी को वन्यजीव संरक्षण हेतु प्रेरित किया है। सी.एम.एस. के इस प्रतिभाशाली छात्र ने पूरे एक वर्ष के लिए लखनऊ चिड़ियाघर के मगरमच्छ को गोद लिया है, जिसका खर्च उन्होंने पूरी तरह से अपनी पॉकेट मनी से उठाया है। खास बात यह है कि लखनऊ में दर्श अग्रवाल ने मात्र 10 वर्ष अर्थात सबसे उम्र में वन्यजीव को गोद लेने का रिकार्ड बनाया है। दर्श ने अपने इस नए दोस्त का नाम 'स्नैपी' रखा है। सी.एम.एस. छात्र का यह अनूठी पहल वन्यजीवन में सकारात्मक बदलाव की उसकी प्रतिबद्धता का दर्शाती है, साथ ही अन्य छात्रों को भी पशु कल्याण में योगदान हेतु प्रेरित करती है। इसके अलावा, दर्श अग्रवाल ने अपने यूट्यूब चौनल के माध्यम से सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर भी एक आंदोलन शुरू किया है, जिसमें आम जनमानस से वन्यजीवों को गोद लेने, प्यार करने और सुरक्षा करने के हेतु प्रेरित किया गया है। सी.एम.एस. अपने छात्रों को वन्यजीवन संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण व सामाजिक जागरूकता विभिन्न कार्यक्रमों में बढ–चढ़ कर प्रतिभाग हेतु प्रोत्साहित करता है, जिससे भावी पीढ़ी प्रकृति प्रदत्त संसाधनों के संरक्षण व सामाजिक विकास में रचनात्मक भूमिका निभा सकें। सी.एम.एस. का मानना है कि वन्यजीव भी प्रकृति प्रदत्त संसाधनों में से एक हैं जो इस प्राकृतिक व्यवस्था को सुचारू ढंग से चलाये रखनें में अनुपम भूमिका निभाते हैं।

इस्कॉन दिल्ली से चली श्रीराम पदयात्रा के स्वागत हेतु गोमतीनगर मे उमड़ा भक्तों का सैलाब!!

लखनऊ रूइस्कॉन द्वारा इंद्रप्रस्थ दिल्ली से अयोध्या तक निकाली जा रही श्रीराम पदयात्रा के दो दिवसीय लखनऊ प्रवास के द्वितीय दिवस दिनांक बारह जनवरी दिन शुक्रवार को लखनऊ में श्रीराम पदयात्रा का भव्य स्वागत इस्कॉन मन्दिर लखनऊ के अध्यक्ष श्रीमान अपरिमेय श्याम प्रभुजी जी एवं इस्कॉन भक्त वृंद द्वारा

गोमतीनगर में पुष्प वर्षा, हरिनाम संकीर्तन एवं नृत्य करते हुए किया गया सआज दिनांक बारह जनवरी को श्रीराम पदयात्रा का प्रमुख कार्यक्रम सहारा प्लाजा, पत्रकारपुरम, गोमतीनगर मे हुआ, जहाँ भक्तों ने पुष्प वर्षा, संकीर्तन एवं नृत्य से उपस्थित भक्तो कों आंनद वर्षा मे सराबोर कर दिया सश्रीराम पदयात्रा मे उपस्थित भक्तो कों सुन्दर स्वादिष्ट प्रसाद वितरित किया गया सश्रीयुत दायशंकर सिंह जी, परिवहन मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आज द्वितीय दिवस श्रीराम पद यात्रा के लखनऊ प्रवास मे विधिवत पूजन–अर्चन किया और भ्रमण मे उपस्थित होकर पदयात्रियों का उत्साहवर्धन किया अंत में मंदिर अध्यक्ष श्रीमान अपरिमेय श्याम प्रभु जी ने उपस्थित पत्रकारों (प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) को उनके सतत सहयोग के लिए धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया और लखनऊ वासियों से निवेदन किया कि आप सब भी अपने घरों मे 22 जनवरी 2024 कों श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर दीपावली मनाएं, अपने घरों कों दीपों से सजायें, रंगोली बनाये एवं आतिशबाजी छुड़ाए...।

बी आई ई टी में उद्यमिता के लिए छात्रों को प्रोत्साहित कर मनाया राष्ट्रीय युवा दिवस

झांसी! बुंदेलखंड अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन सेल छात्र छात्राओं के लिए उद्यमिता पर अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजीत कर मनाया राष्ट्रीय एकता दिवस। संस्थान के निदेशक प्रो दीपेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में बी टेक की सभी शाखा में उद्यमिता, आयडिया टू बिजनेस मॉडल विषय का समावेश अनिवार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आज के परिप्रेक्ष्य में छात्रों के स्वावलंबन, पर्सनैलिटी विकसित करने हेतु, अच्छी जॉब पाने के लिए यह विषय लाभकारी होंगे। कार्यक्रम के विशेषज्ञ वाधवानि फाउंडेशन के श्री अमित सिंह ने इन विषयों की जानकारी दी। तथा इनके पाठयक्रम की विस्तृत चर्चा की। कार्यक्रम की संयोजिका इंक्यूबेशन सेंटर निदेशक डॉ शहनाज अयूब ने दोहराया की संस्थान हमेशा छात्र छात्राओं को स्टार्टअप को प्रेरित करने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने कहा इन जैसे थ्योरी कोर्स को प्रयोगात्मक पद्धति से पढ़ाना छात्रों के लिए अत्यंत लाभकारी होगा। उन्होंने राष्ट्रीय युवा दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया ।

संजय सिंह को दोबारा राज्यसभा भेजे जाने पर आप कार्यकर्ताओं ने किया हर्ष व्यक्त!

झाँसी। आम आदमी पार्टी के उत्तर प्रदेश के प्रभारी संजय सिंह को पार्टी द्वारा पुनः राज्यसभा भेजे जाने के निर्णय पर हर्ष व्यक्त करते हुए आज संपूर्ण प्रदेश में कार्यकर्ताओं ने धन्यवाद केजरीवाल कार्यक्रम कर अपनी भावनाएं प्रकट की जिसके अंतर्गत झाँसी के कार्यकर्ताओं ने आज इलाइट चौराहे पर ढोल नगाड़ों के साथ मिठाई बांट कर अपनी खुशी का इजहार किया।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष अरशद खान ने कहा कि संजय सिंह के दोबारा राज्यसभा जाने से बेरोजगारी, मंहगाई, नारियों पर अत्याचार, लोकतंत्र की सुरक्षा जैसे मुद्दों पर सांसद के अंदर पूर्व की भांति आवाज उठती रहेगी, पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल द्वारा संजय सिंह जी पर जताए गए भरोसे के लिए सभी कार्यकर्ता केजरीवाल जी का धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

महानगर अध्यक्ष ग्यादीन कुशवाहा ने कहा कि मोदी सरकार ने ई0 डी0 का दुरुपयोग कर जिस तरह से से संजय सिंह जी की आवाज दबाने की साजिश की थी वह नाकामयाब हो गई है।सभासद आशीष रायकवार ने कहा कि संजय सिंह जी के दोबारा राज्यसभा जाने से सभी कार्यकर्ता अत्यंत उत्साहित हैं और मिठाई बांट कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं

नवागंतुक पुलिस क्षेत्राधिकारी गरौठा रामवीर सिंह ने संभाला कार्यभार

झांसी! गरौठा में पुलिस क्षेत्राधिकारी के पद पर जिला चंदौली से आए रामवीर सिंह ने कार्यभार संभालते ही नगर गरौठा में पैदल गस्त किया तत्पश्चात थाना गरौठा, थाना ककरवई, थाना एरच एवं थाना गुरसराय का निरीक्षण किया!आज पत्रकार वार्ता में पुलिस क्षेत्राधिकारी गरौठा रामवीर सिंह ने कहा कि सरकार की मंशानुसार कार्य करते हुए अवैध कार्यों पर लगाम लगाना, पीड़ित को न्याय दिलाना तथा दोषियों को उनके अपराध की सजा दिलवाना हमारी प्राथमिकता होगी! क्षेत्र में किसी प्रकार का अवैध कारोबार जुआ, सट्टा, अवैध शराब, अवैध खनन बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद की जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस आयोजित

प्रदीप वर्मा जिला संवाददाता

झांसी। स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रोफेसर मुकेश पांडे ने कहा कि मात्र 39 साल की आयु में ही स्वामी विवेकानंद ने अपने विचारों से केवल राष्ट्र को ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व को विचारों अध्यात्म एवं नव चिंतन से प्रेरित किया। स्वामी विवेकानंद शिक्षा के विषय में कहा है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो चरित्र निर्माण कर सके मां को बल प्रदान कर सके बुद्धि का विकास कर सके एवं मानव को स्वावलंबी बन सके। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत भी स्वामी विवेकानंद की सार्वभौमिक एवं समावेशी शिक्षा को सम्मिलित किया गया है। आज भी युवा जब निराशा एवं परेशान होते हैं तब स्वामी जी के शब्द श्उठो जागो और तब तक ना रुको जब तक अपने लक्ष्य को हासिल ना कर लोश

उन्हें संभल प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि आलोचना आपके घर की परीक्षा लेती है। धैर्यवान व्यक्ति अपने सकारात्मक कर्म में विश्वास करता है ना की आलोचना का उत्तर देता है। गांधी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में इसके पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के राष्ट्रीय एकता दिवस उद्बोधन का सजीव प्रसारण दिखाया गया। कुलपति ने इस अवसर पर स्मार्ट फोनध्टैबलेट योजना के अंतर्गत 10 छात्रों को स्मार्टफोन प्रदान किये। इसी अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार द्वारा कुलपति के सफल दो वर्ष पूर्ण होने पर श्द्वितीय वर्ष अद्वितीय वर्षश कार्यक्रम द्वारा आभार कुलपति को आभार प्रस्तुत किया गया। कुलपति प्रो मुकेश पाण्डेय ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा गया कि विगत वर्षों में बीएड 2023 का सफल संचालन एवं नेक का ए प्लस 3.46 (सीजीपीए) ग्रेड विश्वविद्यालय के प्रत्येक अधिकारी, शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्रों की मेहनत का परिणाम है। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में विश्वविद्यालय वैश्विक संस्थाओं के साथ डुएल डिग्री कोर्स का संचालन, विश्वविद्यालय परिसर में इंस्टीट्यूट आफ प्रोफेशनल स्टडीज की स्थापना, राज्य एवं केंद्र के अनेक संस्थाओं से वित्तीय सहायता, स्टेट ऑफ आर्ट कंप्यूटर सेंटर एवं बुंदेली सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना करने के लिए प्रयाश्रत है और निश्चित ही आप सबके सहयोग से बुंदेलखंड विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शैक्षिक जगत में अपनी पहचान बनाएगा। इस अवसर पर कुलसची विनय कुमार सिंह ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मन तो 2 वर्ष के अंतराल में कुलपति द्वारा किए गए प्रत्येक शैक्षणिक क्षेत्र में सकारात्मक कार्यों से यह सफलता मिली है। कुलपति महोदय को अद्वितीय कुलपति कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस अवसर पर वित्त अधिकारी वसीम मोहम्मद एवं परीक्षा नियंत्रक राज बहादुर सिंह ने भी अपने विचार रखें। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिवार के सभी लोगों ने कुलपति को पुष्प प्रदान कर आभार व्यक्त किया। साथ ही प्रो मुन्ना तिवारी के संपादन में पुस्तिका श्द्वितीय वर्ष अद्वितीय वर्षश का विमोचन किया गया। स्वागत उद्बोधन प्रोफेसर मुन्ना तिवारी एवं विषय प्रस्तावना कार्यक्रम संयोजक प्रो डीके भट्ट ने रखी। संचालन अनुपम व्यास ने किया। इस अवसर पर प्रो एसपी सिंह, प्रो सुनील काबिया, प्रो आरके सैनी, प्रोअर्चना वर्मा, प्रो एम एम सिंह, प्रो देवेश निगम, प्रो पूनम पुरी, प्रो एसके कटियार, प्रो सीबी सिंह, प्रो सौरभ श्रीवास्तव, प्रो संजय निभोरिया, सह कुलसचिव दिनेश प्रजापति एवं सुनील सेन, शेख अंजुम, सहायक कुलसचिव संतोष सिंह, कुलपति के निजी सचिव अनिल बोहरे, अतुल खरे के साथ विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, समन्वयक, प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षकगण, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहीं।

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को सफलता का मूल मंत्र दिया - अरविंद वशिष्ठ

प्रदीप वर्मा जिला संवाददाता

झांसीरू यूथ वेलफेयर सोसाइटी के तत्वाधान में आज स्वामी विवेकानंद की जयंती सदस्य इंडो जर्मन टूल रूम – सूक्ष्म लघु एवं उद्यम मध्यम मंत्रालय भारत सरकारध समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता अरविंद वशिष्ठ के मुख्यातिथ्य एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्रह्म विभूति स्मृति न्यास के अध्यक्ष अवधेश मकड़रिया उपस्थित रहे ! कार्यक्रम की अध्यक्षता जितेंद्र भदौरिया ने की मुख्य अतिथि अरविंद वशिष्ठ ने कहा कि स्वामी विवेकानंद की जयंती हम युवा दिवस के रूप में मानते हैं स्वामी जी का जीवनकाल मात्र 39 वर्ष का रहा! स्वामी जी कहते थे एक विचार उठाओ, उस एक विचार को अपना जीवन बनाओ, उसके बारे में सोचो, उसके सपने देखो, मस्तिष्क, मांसपेशियों, तंत्रिकाओं, शरीर के हर हिस्से को उस विचार से भरा रहने दो, और बाकी सभी विचारों को अकेला छोड़ दो!यही सफलता का रास्ता है! यदि आप स्वामी जी के इस वाक्य को मूल मंत्र मान ले तो आपको बड़ी से बड़ी सफलता प्राप्त करने से कोई ताकत नहीं रोक सकता! उनकी जयंती पर मैं उन्हें शत–शत नमन करता हूं!

विशिष्ट अतिथि अवधेश मकड़रिया ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी के विचारों ने मुझे गहराई तकप्रभावित किया है उनके वह शब्द जो सदैव ब्रह्मांड की ताकत रहेंगे उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए मुझे हमेशा प्रेरणा देते है ! कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जितेंद्र भदौरिया ने कहा कि स्वामी जी युवाओं को प्रेरित करने के लिए कहते थे की शिक्षा बहुत जरूरी है जब तक जीना है तब तक सीखना है अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है स्वामी विवेकानंद जी का मानना था की युवा सभी समस्याओं से लड़ सकते हैं इसलिए वे कहते थे मेरे साहसी युवाओं यह विश्वास रखो कि तुम ही सब कुछ हो, महान कार्य करने के लिए इस धरती पर आए हो चाहे वज्र भी गिरे तो भी निडर हो खड़े हो जाना और कार्य में लग जाना, सफलता सदैव तुम्हारे साथ रहेगी !

स्वामी विवेकानंद जी के विचारों ने मुझे गहराई तक प्रभावित किया है उनके वह शब्द जो सदैव ब्रह्मांड की ताकत रहेंगे उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए मुझे हमेशा प्रेरणा देते हैं उनकी जयंती पर मैं उन्हें शत–शत नमन करता हूं!उक्त अवसर पर अभिषेक दिक्षित, निखिल पाठक, अमित चक्रवर्ती, अंजुल पुरोहित, प्रखर पंडित, सिद्धार्थ पालीवाल, आदित्य वशिष्ठ , आलोक ठाकुर, विकास सेंगर,सिद्धार्थ गौतम, मनीष कश्यप, हैदर अली,आदि ने विचार व्यक्त करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए!

विवेकानंद का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत – डा. बिजेन्द्र सिंह

-कृषि विवि में राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई गयी स्वामी विवेकानंद की जयंती

संवाददाता।

मिल्कीपुर–अयोध्या । आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद की 161वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर किया। वहीं दूसरी तरफ महाराष्ट्र के नासिक में प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय युवा महोत्सव कार्यक्रम का लाइव प्रसारण भी देखा गया। इस दौरान कुलपति के साथ शिक्षक, वैज्ञानिक, कर्मचारी व छात्र–छात्राओ ने प्रधानमंत्री के विचारों को सुना। युवाओं को संबोधित करते हुए कुलपति डा. बिजेंद्र सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का पूरा जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं, उनके विचारों को अपनाकर जीवन को सरल एवं सफल बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि स्वामी के एक संत ही नहीं बल्कि एक महान देशभक्त, दार्शनिक, वक्ता होने के साथ–साथ लेखक भी थे। कुलपति ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने भारत और भारतीय संस्कृति को दुनियाभर में एक अलग पहचान दिलाई है। युवा साथियों के साथ–साथ हम सभी को उनके आदर्शों को आत्मसात करने की जरूरत है। इस मौके पर आध्यात्मिक संस्थान हैदराबाद से पहुंचे अरुण कुमार व चंद्रप्रकाश ने छात्र–छात्राओं को ध्यान एवं योग कराया। वहीं दूसरी तरफ विवि के हाईटेक हाल में छात्र–छात्राओं ने महाराष्ट्र के नासिक में प्रधानमंत्री मोदी के राष्ट्रीय युवा महोत्वस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण देखा। पीएम ने कहा कि आज का दिन युवा शक्ति का दिन है, देश के ऋषि मुनियों, संतों से लेकर सामान्य वर्ग तक सभी लोगों ने युवा शक्ति को सर्वोपरि रखा। प्रधानमंत्री ने कहा कि अगर भारत को अपने लक्ष्य पूरा करने हैं तो युवाओं को नई सोच के साथ आगे बढ़ना होगा। युवा भारत की शक्ति का परचम पूरी दुनिया में लहराएगा। छात्र कल्याण अधिष्ठाता डा. डी.के दिवेदी के संयोजन में कार्यक्रम आयोजित हुआ। आयोजक सचिव डा. भानुप्रताप व डा.एस.के वर्मा रहे।

मनोज गुप्ता के निवास पर, सुंदर काण्ड पाठ का आयोजन किया गया

झांसी! कल दिनांक 11जनवरी 2024को, व्यापार मण्डल सिमरावारी खैलार भेल झांसी के उपाध्यक्ष मनोज गुप्ता जी के निवास पर, सुंदर

काण्ड पाठ का आयोजन किया गया। यह पाठ महंत श्री सियाशरण महाराज जी एवं माधव दास जी के सौजन्य से संपन्न हुआ सियाशरण महाराज ने बताया कि, 22जनवरी 2024को, अयोध्या में भगवान श्री राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होने जा रही है। जिस कारण प्रतिदिन सुन्दर काण्ड पाठ का आयोजन, क्षेत्र में कराया जा रहा है मनोज गुप्ता जी ने बताया कि, उन्होंने विगत 20वर्षों से, राम नाम लिखकर अयोध्या धाम में , राम नाम बैंक में जमा कर रहे हैं। जिनकी संख्या एक करोड़ से अधिक हो गई है

वृद्धाश्रम में मिष्ठान वितरण कर मनाया प्रियंका गांधी का जन्मदिन

संवाददाता।

सुलतानपुर। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी का जन्मदिन शुक्रवार को जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय में धूमधाम से मनाया गया। कांग्रेस जिला अध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा के नेतृत्व एवं शहर अध्यक्ष शकील अंसारी की अध्यक्षता में पार्टी कार्यालय पर भारी संख्या में मौजूद पार्टी कार्यकर्ता व पदाधिकारी की उपस्थिति में जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय में केक काटकर एवं एक दूसरे को मिष्ठान खिलाकर कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया। तत्पश्चात भारी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता व नेता शहर स्थित वृद्धा आश्रम पहुंचे, जहां लोगों को फल एवं मिष्ठान वितरण कर कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी के लंबी उम्र एवं उनके दीर्घायु होने की कामना की। वरिष्ठ नेता लाल पदमाकर सिंह, नफीस फारुकी, तेज बहादुर पाठक, ओपी चौधरी समेत सभी लोगो ने कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना किया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने कहा कि कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी हम सब की प्रिय नेता हैं जिन्होंने 'लड़की हूं लड़ सकती हूं' नारे को बुलंद कर देश व प्रदेश की बेटियों व महिलाओं को सशक्त बनाया। वहीं उन्होंने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी की जन विरोधी नीतियों से देश व प्रदेश तंग है, देश में महंगाई भ्रष्टाचार चरम पर है। भाजपा सरकार बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ का नारा देकर देश की बेटियों के साथ उत्पीड़न कर रही है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसद के क्षेत्र में गैंगरेप जैसी जघन्य वारदात को अंजाम देने वाले भाजपा से जुड़े नेता है। 2 महीने से अधिक का समय बीत गया लेकिन इन पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई इससे यह साबित होता है कि भारतीय जनता पार्टी महिला विरोधी है। शहर अध्यक्ष शकील अंसारी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी में सबसे ज्यादा महिलाओं पर उत्पीड़न हुआ है देशभर में गुंडे व माफियाओं का राज है। फर्जी एनकाउंटर समेत महिला उत्पीड़न रोकने में भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन की सरकार रोकने में पूरी तरह से नाकाम है, इनकी जन्म विरोधी नीतियों को उजागर करने वाले विपक्ष के नेताओं पर इनकम टैक्स, सीबीआई, ईडी जैसी एजेंसियों को इस्तेमाल कर उन्हें डरा धमका कर जेल भेज दिया जाता है। लेकिन अब देश की जनता इनकी जन विरोधी नीतियों को समझ चुकी है आने वाले 2024 के लोकसभा चुनाव में मुंहतोड़ जवाब देकर इन्हें सत्ता से उखाड़ फेंकेगी। इस मौके पर फिरोज अहमद खान योगेश सिंह मिर्जा अकरम बेग राहुल त्रिपाठी सुब्रत सिंह सनी कमर खान पवन मित्र नन्हे पूर्व जिला अध्यक्ष कृष्ण कुमार मिश्रा अमोल बाजपेई सुरेंद्र शुक्ला हौशिला भीम निकलेश सरोज राम कुमारी मीनू यादव रेनू चौहान विजयपाल मनमुन आलम आवेश अहमद शाहबाज जनार्दन शुक्ला ओमप्रकाश त्रिपाठी चौटाला धर्मराज मिश्र प्रदीप सिंह ओमप्रकाश दुबे देवेंद्र तिवारी बलराम तिवारी राहुल मिश्रा शीतल साहू आदि लोग मौजूद रहे।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, शनिवार 13 जनवरी 2024
sheelshukla100@gmail.com

संपादकीय

दावे भी तो ऐसे!

यह धारणा बनी है कि भारतीय अर्थव्यवस्था ने अंग्रेजी के ्य अक्षर की शक्ल हासिल कर ली है। एसबीआई की इस रिपोर्ट का मकसद इसी धारणा को तोडना मालूम पड़ता है। इसके लिए कई हवाई तर्क इसमें शामिल किए गए हैं।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने अपनी एक ताजा रिपोर्ट ऐसे दावे किए हैं, जिनकी तुलना सिर्फ हवा में उड़ाए गए गुब्बारों से की जा सकती है। एसबीआई का दावा है कि भारत में हाल के सालों में आर्थिक असमानता घटी है। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि हर क्षेत्र में खुशहाली का आलम है। एसबीआई ने असमानता का अनुमान लगाने के लिए आयकर डेटा का इस्तेमाल किया है। और इन आंकड़ों के आधार पर सारे देश की माली हालत का अंदाजा लगा लिया गया है। जबकि देश में केवल आठ करोड़ लोग आयकर रिटर्न फाइल करते हैं। उनमें से भी चार करोड़ शून्य रिटर्न फाइल करते हैं– यानी वे एक पैसा इनकम टैक्स नहीं देते। तो बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो वास्तव में इनकम टैक्स दे रहे हैं। ऐसे लोगों की संख्या भारत की कुल आबादी में सिर्फ लगभग दो फीसदी बैठती है। एसबीआई के विशेषज्ञों ने सिर्फ उनके आधार पर आर्थिक गैर–बराबरी के घटने का दावा कर दिया गया है।

जबकि इनकम टैक्स डेटा के आधार पर आर्थिक गैर–बराबरी के बारे में शायद ही कुछ कहा जा सकता है। इसलिए कि यह डेटा कुल आबादी के बहुत छोटे हिस्से से संबंधित है। पहली बात तो इनसे धनी लोगों की ब्लैक मनी से संबंधित कोई जानकारी नहीं मिलती। दूसरी तरफ आबादी के लगभग 95 प्रतिशत हिस्से के बारे में इनसे कोई सूचना नहीं मिलती। कुल आबादी की आमदनी और उपभोग के आंकड़ों के आधार पर हुए कई हालिया अध्ययनों से देश में लगातार बढ़ती जा रही विषमता की पुष्टि हुई है। उनके आधार पर ही यह धारणा बनी है कि भारतीय अर्थव्यवस्था ने अंग्रेजी के ्य अक्षर की शक्ल हासिल कर ली है। एसबीआई की इस रिपोर्ट का मकसद इसी धारणा को तोडना मालूम पड़ता है। इसके लिए कई हवाई तर्क इसमें शामिल किए गए हैं। मसलन, एमएसएमई (सूक्ष्म– लघु– मध्यम उद्यम) क्षेत्र में कारोबार इसलिए घटा है, क्योंकि वैसी कंपनियां ब्रांड चेन के माध्यम से बड़ी कंपनियां में बदल गईं हैं। और यह कि कि लोग ग्रामीण इलाकों में दोपहिया वाहनों को छोड़कर कार खरीद रहे हैं, इसलिए दोपहिया वाहनों की बिक्री में गिरावट आई है।

हेडलाइन ही मकसद है

हेडलाइन बनी कि इस वित्त वर्ष में भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था की प्रतिष्ठा बरकरार रखेगी। लेकिन इस सुर्खी के नीचे के विस्तार पर गौर करें, तो इस हेडलाइन से पैदा हुआ सुखबोध जल्द ही गायब हो जाता है। आज के सत्ता पक्ष के कर्ता–धर्ताओं की सारी चिंता हेडलाइन मैनेज करने की होती है, इसलिए अगर सुखद सुर्खियां बन जाएं, तो उनका काम बन जाता है। इसलिए मुख्यधारा चर्चा में सुर्खियों के नीचे छिपी सूचनाएं शायद ही कभी चर्चा का विषय बनती हैं। वर्ष 2023–24 के बारे में राष्ट्रीय सांख्यिकी संगठन (एनएसओ) के हाल में जारी अनुमान के साथ भी यही हुआ है। हेडलाइन बनी कि इस वित्त वर्ष में भारत की अर्थव्यवस्था 7.3 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल करेगी और इस तरह दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था की प्रतिष्ठा बरकरार रखेगी। लेकिन इस सुर्खी के नीचे के विस्तार पर गौर करें, तो इस हेडलाइन से पैदा हुआ सुखबोध जल्द ही गायब हो जाता है। तब ध्यान इस पर जाता है कि इस वृद्धि दर का सबसे बड़ा हिस्सा सरकारी खर्च से आएगा, निजी क्षेत्र के निवेश की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, निजी उपभोग में वृद्धि की दर 20 साल के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है और राजकोषीय घाटे को नियंत्रित रखने की चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं।

कृषि, पशुपालन, वन क्षेत्र और मछली कारोबार में इस वित्त वर्ष में सिर्फ 1.8 प्रतिशत की दर से वृद्धि होगी, जबकि ये क्षेत्र आज भी देश में सबसे ज्यादा रोजगार उपलब्ध करवाते हैं। देश की अर्थव्यवस्था में सर्वाधिक योगदान करने वाले सेवा क्षेत्र का हाल भी बेहतर नहीं है। इस क्षेत्र में बड़ा योगदान करने वाले– होटल, परिवहन, संचार और प्रसारण क्षेत्र की विकास दर गिर कर आधी (6.3 प्रतिशत) रह जाएगी। जहां तक हेडलाइन की बात है, तो हाल में अक्सर ऐसा देखा गया है कि जब असल आंकड़े आते हैं, तो उनमें नकारात्मक संशोधन करना पड़ता है। मान लें कि इस बार ऐसा नहीं होगा। तब भी यह हेडलाइन अर्थव्यवस्था की गुलाबी तस्वीर का प्रतिबिंब नहीं है। बहरहाल, यह हकीकत तब मायने रखती, अगर सत्ता के सर्वोच्च स्तरों पर चिंता अर्थव्यवस्था को सचमुच गुलाबी रंग देने की होती। फिलहाल, रुझान नकारात्मक से नकारात्मक कहानी के बीच कुछ सकारात्मक ढूंढ लेने का है, ताकि आबादी के एक बड़े हिस्से में सब कुछ ठीक दिशा में होने का यकीन बना रहे।

मैक्रों ने चला अटल का दांव

श्रुति व्यास

इमैनुएल मैक्रों को एक जीत की दरकार थी, और गेब्रियल अटल को प्रधानमंत्री नियुक्त कर उन्होंने वह जीत हासिल कर ली है। मैक्रों का दूसरा कार्यकाल उथलपुथल भरा रहा है। उन्हें अलोकप्रियता और जनता की अस्वीकृति का सामना करना पड़ाहै। जनता में पेंशन संबंधी सुधारों, जिनके जरिए रिटायरमेंट की उम्र 62 से बढ़ा कर 64 साल की गई, और दक्षिणपंथियों को खुश करने के लिए प्रस्तावित कठोर आप्रवासी कानूनों को लेकर नाराजगी थी। इसलिए इमैनुएल मैक्रों की छवि एक ऐसे राष्ट्रपति की बन गई जिसने उसे उपलब्ध मौके खो दिए। यह युवा नेता जब सत्ता में आया था, तब वह अपने साथ लाया था ढेर सारी आशाएं और उत्साह। अब उनका स्थान फ्रांस में असंतोष और निराशा ने ले रखा है।

और 62 साल की एलिजाबेथ बोर्न को हटाकर, जिन्होंने इस बात को छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया कि वे उन पर दबाव डाले जाने से नाराज हैं, मैक्रों ने कठिनाई भरे अपने दूसरे कार्यकाल के अंतिम दौर को बेहतर बनाने का प्रयास किया है।34 वर्षीय अटल दृ जो देश के सबसे युवा और पहले खुले तौर पर समलैंगिक प्रधानमंत्री हैं दृ को नियुक्त कर मैक्रों यह उम्मीद कर रहे हैं कि उनके नंबर कुछ बढ़ जाएंगे। यह माना जाता है कि यह नया युवा प्रधानमंत्री पिछली अलोकप्रिय सरकार का सबसे लोकप्रिय राजनेता था। अटल को इसलिए चुना गया है ताकि उम्मीद की वापसी हो सके। अपनी पुस्तक श्रेविल्यूशन्च, जो उन्होंने अपने पहले राष्ट्रपति चुनाव अभियान के पहले लिखी थी, में मैक्रों ने लिखा था, जो चीज फ्रांस को एक रखती है वह है व्यक्तियों के नस्लीय मूल और नियति की विविधता को स्वीकार और भाग्यवाद को नामंजूर करना।

मैक्रों 39 वर्ष के थे जब वे फ्रांस के राजनैतिक तंत्र को एक नयी दिशा देते हुए देश के इतिहास के सबसे युवा राष्ट्रपति बने। अटल, जो सन् 2016 में मैक्रों के चुनाव प्रचार में भाग लेने के समय से ही उनके वफादार रहे हैं, अप्रैल 2027 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के समय 38 वर्ष के होंगे और यदि उनका वर्तमान कार्यकाल सफल रहता है तो संभावना है कि वे अगले चुनाव में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार होंगे।

सख्त सर्दी में प्रधानमंत्री निवास के परिसर में आयोजित समारोह में निवृत्मान प्रधानमंत्री बोर्न के बगल में खड़े अटल ने कहा कि उनकी और राष्ट्रपति मैक्रों की युवावस्था साहस और गतिशीलता की प्रतीक हैं। लेकिन उन्होंने यह भी स्वीकार किया

44 विशेष ट्रेन, 45 क्षेत्र, 1,500 से 2,500 तीर्थ यात्री, 22 जनवरी के बाद राम मंदिर की चर्चा को कैसे जारी रखने की योजना बना रहा संघ परिवार ?

संघ के सूत्रों ने कहा कि एक लाख तीर्थयात्रियों में वे लोग शामिल होंगे जिन्होंने वर्षों से विभिन्न तरीकों से मंदिर निर्माण में योगदान दिया है, जिसमें अयोध्या राम जन्मभूमि अभियान में भाग लेने से लेकर मंदिर के लिए वित्तीय दान देना शामिल है। संघ परिवार की तरफ से ये सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है कि 28 राज्यों और आठ केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) के एक लाख से अधिक लोग राम मंदिर के दर्शन के लिए 27 जनवरी से 22 फरवरी के बीच उत्तर प्रदेश के अयोध्या पहुंचने के लिए 44 विशेष ट्रेनों में सवार हों। 22 जनवरी को होने वाले भव्य राम लला प्रतिष्ठा समारोह के बाद मंदिर का उत्साह कम न हो इसके लिए संघ परिवार देश भर के इन लोगों के लिए अयोध्या मंदिर का एक निर्देशित दौरा आयोजित करने के लिए तैयार है। संघ के सूत्रों ने कहा कि एक लाख तीर्थयात्रियों में वे लोग शामिल होंगे जिन्होंने वर्षों से विभिन्न तरीकों से मंदिर निर्माण में योगदान दिया है, जिसमें अयोध्या राम जन्मभूमि अभियान में भाग लेने से लेकर मंदिर के लिए वित्तीय दान देना शामिल है। विहिप ने पहले ही देश भर में अपने कार्यकर्ताओं को किया तैनात विहिप अध्यक्ष आलोक कुमार ने द इंडियन एक्सप्रेस से बात करते हुए कहा कि विहिप उन लोगों और उनके परिवारों के प्रति यह जिम्मेदारी रखती है जिन्होंने मंदिर के निर्माण में बलिदान दिया है या कोई योगदान दिया है। इनमें कारसेवक शामिल हैं, जो रथयात्रा का हिस्सा थे। वे लोग जिन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में आंदोलन के समर्थन में समारोह आयोजित किए और वे लोग जिन्होंने राम मंदिर निधि में महत्वपूर्ण वित्तीय योगदान दिया। सूत्रों ने कहा कि ये यात्राएं न केवल 22 जनवरी के समारोह के बाद राष्ट्रीय चेतना में राम मंदिर की रोशनी जलाए रखेंगी बल्कि उन लोगों के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति भी होंगी जिन्होंने मंदिर के निर्माण में अपने तरीके से योगदान दिया और उन्हें अयोध्या में प्राण–प्रतिष्ठा कार्यक्रम में नहीं बुलाया जा सका। इसके लिए विहिप ने पहले ही देश भर में अपने कार्यकर्ताओं को तैनात कर दिया है, जिन्हें ऐसे आमंत्रित लोगों की पहचान करने और उनकी अयोध्या यात्रा की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।1,500 से 2,500 तीर्थयात्रियों का कोटा

आलोक कुमार ने कहा कि पूरे देश को 45 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक क्षेत्र में लगभग 1,500 से 2,500 तीर्थयात्रियों का कोटा है जो यात्रा करेंगे। रेल मंत्रालय से 27 जनवरी से 22 फरवरी के बीच इस उद्देश्य के लिए 44 विशेष ट्रेनें चलाने का अनुरोध किया गया है। तीर्थयात्रियों के आने पर, उनके आवास, भोजन और दर्शन की व्यवस्था हमारी ओर से की जाएगी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि गैर–हिंदी भाषी राज्यों के लोगों को तीर्थनगरी में यात्रा करने में कोई असुविधा न हो, संघ परिवार ने उनकी सहायता के लिए ऐसे राज्यों के अपने कार्यकर्ताओं को शामिल करने की योजना बनाई है, जिन्हें 10 दिन पहले अयोध्या पहुंचने के लिए बुलाया जाएगा। तीर्थयात्रियों का आगमन. इन कार्यकर्ताओं को गुजरात, महाराष्ट्र, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के अलावा दक्षिणी राज्यों सहित ऐसे राज्यों के आगंतुक समूहों से जोड़ा जाएगा। विहिप नेता ने कहा कि ये स्वयंसेवक शहर भर में तीर्थयात्रियों का मार्गदर्शन करेंगे, उनके ठहरने, मंदिर के दर्शन और वहां प्रार्थना करने में उनकी मदद करेंगे।हर लोकसभा क्षेत्र से लगभग 10,000 लोगों को अयोध्या लाएगी बीजेपी इन तीर्थयात्रियों के दो दिनों तक अयोध्या में रहने की उम्मीद है। विहिप प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि उनके लिए वहां एक टेंट सिटी में विशेष व्यवस्था की जाएगी। सूत्रों ने कहा कि उनमें से पहला समूह उत्तराखंड से, उसके बाद दिल्ली और झारखंड के अलावा अन्य राज्यों से आने की उम्मीद है। बंसल ने कहा कि जहां भी ट्रेन सेवाएं नहीं हैं, वहां लोगों को उनके निकटतम रेलवे स्टेशनों तक पहुंचाने के लिए विभिन्न बेल्टों में व्यवस्था की जा रही है।यह केवल एक अयोजन (घटना) नहीं है। यह एक महायोजना है। ऐसा हो जाने के बाद, ऐसे और दौरों की योजना बनाई जा सकती है। इसके अलावा, सत्तारूढ़ भाजपा 25 जनवरी के बाद देश के हर लोकसभा क्षेत्र से लगभग 10,000 लोगों को अयोध्या लाने की योजना बना रही है। सूत्रों ने कह कि इस संबंध में एक निर्णय लि गया है, जिसकी रूपरेखा पर पा काम कर रही है। सूत्रों ने बता कि यह कवायद अप्रैल–मई होने वाले लोकसभा चुनाव साथ मार्च के अंत तक जा रहेगी।

शनिवार को इण्डिया गठबंधन की वर्चुअल बैठक, शामिल होंगे शीर्ष नेता, नीतीश कुमार को लेकर हो सकता है बड़ा फैसला

इंडिया गठबंधन के सामने वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौती संयोजक पद है। माना जा रहा है कि कल के बैठक में नीतीश कुमार को संयोजक बनने पर फैसला हो सकता है। साथ ही साथ इसकी घोषणा भी की जा सकती हैं। इसके अलावा जिन राज्यों में सीट बंटवारे को लेकर मामला बिगड़ रहा है वहां बड़े नेताओं के बीच बातचीत हो सकती है। इंडिया ब्लॉक ने शनिवार को 11रू30 बजे एक बैठक निर्धारित की है। इस ऑनलाइन बैठक में नीतीश कुमार को समन्वयक नियुक्त किया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक इस वर्चुअल बैठक में प्छक्प्। गठबंधन के 14 दलों के शीर्ष नेता शामिल होंगे। हालांकि इससे पहले दो बार ऑनलाइन बैठक को रद्द किया जा चुका है। पिछले सप्ताह भी इंडिया गठबंधन के नेताओं की ऑनलाइन बैठक होने वाली थी। शनिवार को यह ऑनलाइन बैठक ऐसे समय में बुलाई गई है जब कांग्रेस तमाम क्षेत्रीय दलों के साथ सीट बंटवारे को लेकर मंथन कर रही है। इंडिया गठबंधन के सामने वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौती संयोजक पद है। माना जा रहा है कि कल के बैठक में नीतीश कुमार को संयोजक बनने पर फैसला हो सकता है। साथ ही साथ इसकी घोषणा भी की जा सकती हैं। इसके अलावा जिन राज्यों में सीट बंटवारे को लेकर मामला बिगड़ रहा है वहां बड़े नेताओं के बीच बातचीत हो सकती है। पश्चिम बंगाल में गठबंधन के लिए कांग्रेस को दो लोकसभा सीटों की पेशकश करने वाली तृणमूल कांग्रेस ने बाद की राष्ट्रीय गठबंधन समिति के साथ आ की बातचीत से इनकार क दिया है, लेकिन दोनों दलों शीर्ष नेताओं के बीच बातची के लिए दरवाजा खुला रखा है कांग्रेस के गठबंधन पैनल एक सदस्य के अनुसार, टीएमस द्वारा दी गई दोनों सीटें पहले ही कांग्रेस के पास हैं, जिस पार्टी के लिए समझौते क स्वीकार करना मुश्किल हो ग है। रिपोर्ट के मुताबिक, टीएमस ने मेघालय में भी एक सीट क अनुरोध किया है और दावा कि है कि पिछले विधानसभा चुना

विपक्ष को अभी बहुत काम करना है!

अजीत द्विवेदी,

कांग्रेस और दूसरी विपक्षी पार्टियां धीरे धीरे सदमे से उबर रही हैं। हिंदी भाषी तीन राज्यों में कांग्रेस की करारी हार ने सिर्फ कांग्रेस का मनोबल नहीं तोड़ा था, बल्कि विपक्षी गठबंधन इंडियाच के दूसरे घटक दलों का भी हौसला टूट गया था। तीन राज्यों में कांग्रेस की हार के बाद कई राज्यों में प्रादेशिक क्षत्रपों के तेवर बदल गए। कहीं कांग्रेस को आंख दिखाई जाने लगी तो कहीं कांग्रेस का स्वागत होने लगा। ऐसा होने के दो कारण हैं। या तो विपक्षी पार्टियों ने मान लिया है कि भाजपा से मुकाबला मुश्किल हो गया और अब उसे हराया नहीं जा सकता है। बिहार में नीतीश कुमार की पार्टी इस मानसिकता का प्रतिनिधित्व करती है। भले नीतीश का अंतिम फैसला कुछ भी हो लेकिन उनकी पार्टी के नेता मान रहे हैं कि भाजपा से लडने की बजाय उसके साथ चलना चाहिए। दूसरी ओर जिनको कांग्रेस की जरुरत महसूस होने लगी है उसमें समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव हैं तो आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल भी हैं। दोनों तालमेल के लिए तैयार दिख रहे हैं और सीट बंटवारे को लेकर हुई पहली बैठक से यह साफ भी हो गया है।

बहरहाल, तीन राज्यों में कांग्रेस की हार ने विपक्षी पार्टियों और सोशल मीडिया में भाजपा विरोधी पूर्व नौकरशाहों, पूर्व पत्रकारों, सामाजिक विचारकों आदि को किस तरह से प्रभावित किया है और कैसे विपक्ष के तमाम फ्रीलांस समर्थक चूहों की तरह विपक्षी जहाज से कूदने लगे हैं वह अलग चर्चा का विषय है। अभी जो विपक्ष एकजुट है और अगले लोकसभा चुनाव में भाजपा से मुकाबले की तैयारी कर रहा है उसे बहुत काम करने होंगे। सबसे अहम काम एक मजबूत व भरोसे का गठबंधन बनाना है, जिसमें सीटों का तालमेल इस तरह से हो कि उस पर कोई विवाद न रहे। यह सबसे अहम काम है क्योंकि अगर सबकी सहमति से सीटों का बंटवारा नही होता है तो जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं और नेताओं को गठबंधन के उम्मीदवारों का दिल से साथ देने के लिए तैयार करना मुश्किल हो जाएगा। अगर सबकी सहमति से सीटों का बंटवारा होता है और यह मैसेज बनता है कि सबके लिए विन–विन सिचुएशन है यानी साथ मिल कर लडने से सब फायदे में रहेंगे तो कार्यकर्ता जुड़ेंगे और मेहनत करके चुनाव लड़ेंगे। सो, भरोसे का गठबंधन और वस्तुनिष्ठ आकलन के साथ सीटों का बंटवारा पहला काम है, जिसे विपक्षी पार्टियों को तय समय सीमा के भीतर कर लेना चाहिए।

इसके बाद गठबंधन का नेतृत्व करने वाले चेहरे का मामला है। विपक्षी गठबंधन की दिल्ली में हुई चौथी बैठक में सबको हैरान करते हुए ममता बनर्जी ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे का नाम का प्रस्ताव रख दिया था। उन्होंने खडगे को प्रधानमंत्री पद का दावेदार बना कर लडने की बात कही, जिसका समर्थन अरविंद केजरीवाल ने किया। इससे गठबंधन के अंदर विभाजन और भरोसे का संकट दिखा। इसके तुरंत बाद बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तेवर दिखाए और राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक बुला कर खुद पार्टी के अध्यक्ष बन गए। इंडियाच गठबंधन को मजबूत बनाने और भाजपा विरोधी नैरेटिव का चेहरा बने राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह को उन्होंने अध्यक्ष पद से हटा दिया।अब उनकी पार्टी के नेता मांग कर रहे हैं कि संयोजक के साथ साथ नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री पद का दावेदार भी बनाया जाए। खडगे ने हालांकि बैठक में ही ममता के प्रस्ताव को खारिज कर दिया था लेकिन ममता ने वह राग बंद नहीं किया है। उनको कांग्रेस से तालमेल करने में परेशानी हो रही है पर कांग्रेस अध्यक्ष को प्रधानमंत्री पद का दावेदार बना कर लडने का सुझाव दे रही हैं। इससे अपने आप उनका विरोधाभास जाहिर होता है। सो, कांग्रेस और दूसरी पार्टियों को गठबंधन के चेहरे के बारे में फैसला करना है। एक सुनियोजित रणनीति बनानी होगी और उसके साथ जनता के बीच जाना होगा। अगर यह फैसला होता है कि बिना किसी चेहरे के और सामूहिक नेतृत्व में विपक्ष लड़ेगा तो इसके सभी पहलुओं पर विचार करना होगा ताकि जनता के बीच जाने पर किसी तरह का कंफ्यूजन न रहे और न कोई विरोधाभास दिखे।

इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से तैयार किए गए चुनावी विमर्श का जवाब देने की रणनीति बनानी होगी। मोदी के चुनावी विमर्श में हिंदुत्व का मुद्दा प्रमुख है, जिसका प्रतीक श्रीराम जन्मभूमि मंदिर है। इसका उद्घाटन 22 जनवरी को होगा और उसके बाद भाजपा पूरे देश से रामभक्तों को अयोध्या ले जाने का अभियान चलाएगी। सो, हिंदुत्व और राममंदिर के चुनावी विमर्श का विपक्ष को कैसे मुकाबला करना है इसकी रणनीति जल्दी से जल्दी बनानी होगी। अभी सभी पार्टियां अपने अपने हिसाब से इस मसले से निपटने की कोशिश कर रही हैं। कांग्रेस नेता अयोध्या नहीं जा रहे है पर उत्तर प्रदेश में जहां यह कार्यक्रम हो रहा है वहां की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी समाजवादी पार्टी ने यह स्टैंड लिया है कि जब रामजी बुलाएंगे तो जाएंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनको न्योता नहीं मिला है।उधर मुंबई में उद्धव ठाकरे 22 जनवरी को नासिक जाएंगे और राममंदिर में पूजा अर्चना करेंगे। क्या यह अच्छा नहीं होता कि जिन विपक्षी पार्टियों के नेताओं को नहीं बुलाया गया है वे सभी 22 जनवरी को भगवान राम के किसी दूसरे प्रसिद्ध मंदिर में जाकर पूजा करते? उस दिन सब कोऑर्डिनेटेड तरीके से अलग अलग मंदिरों में भी जा सकते हैं। कुछ भी करके विपक्षी पार्टियों को व्यापक हिंदू समाज में यह संदेश देना चाहिए कि वे अयोध्या में राममंदिर निर्माण से खुश हैं और हिंदू धर्म के इस गौरवपूर्ण क्षण में उनके साथ हैं।

हिंदुत्व और मंदिर के अलावा मोदी के चुनावी विमर्श में राष्ट्रवाद एक बड़ा मुद्दा है और उन्होंने इसके साथ ही बुनियादी ढांचे के विकास, गरीब कल्याण, लाभार्थी आदि के नैरेटिव को भी शामिल किया है। विपक्ष को इसका जवाब भी खोजना होगा। नरेंद्र मोदी द्वारा सेट किए गए एजेंडे के बरक्स एक वैकल्पिक एजेंडा तय किए बगैर चुनाव एकतरफा हो जाएगा। विपक्ष की ओर से लगातार यह प्रयास होता है कि विकास और आम लोगों की भलाई के मुद्दे पर सरकार को विफल करार दिया जाए। वह प्रयास जारी रखते हुए विपक्ष को अपना एक मॉडल पेश करना होगा और उसे ऐसे पेश करना होगा कि जनता उस पर भरोसा करे।

ध्यान रहे नरेंद्र मोदी को जिन लोगों ने दो चुनावों में वोट किया है उनका वोट तोडना मुश्किल है। वह वोट ज्यादा मजबूती से मोदी के साथ जुड़ा है। लेकिन जिसने पहले मोदी को वोट नहीं किया है या जो लोग पहली बार वोट करेंगे या जो नए लोग मतदान करने जाएंगे उनका वोट अपनी ओर करने का प्रयास विपक्ष को करना चाहिए। इसके लिए एक तरीका तो वह है, जिसे आजमाने की बात सब कर रहे हैं। अगर अधिकतर सीटों पर भाजपा बनाम विपक्ष का मुकाबला हो यानी वन ऑन वन मुकाबला बने तो अपने आप विपक्ष का वोट एकजुट होगा। लेकिन इसके लिए उन मतदाताओं को अपने एजेंडे और विकास के रोडमैप से यह भरोसा भी दिलाना होगा कि वह विपक्ष के उम्मीदवार को वोट करके गलती नहीं कर रहा है।

डिजिटल अंतर मिटाने का वक्त

नए वर्ष में जैसे–जैसे लोकसभा चुनाव करीब आते जाएंगे सियासी गर्मी बढ़ती जाएगी। इस दौरान कई गैर–जरूरी मुद्दे बहस के केंद्र में आ सकते हैं, जिससे बाकी मुद्दों को विमर्श से बाहर कर दिया जाएगा। लेकिन एक ऐसा मुद्दा है, जो देश के भविष्य के साथ जुड़ा है। यह है–मानव पूंजी। भारत एक युवा राष्ट्र है, जहां औसत उम्र मात्र 28 वर्ष है। देश के जनसांख्यिकीय लाभ के बारे में बातें होती हैं, पर यह लाभ मिलेगा ही, इसकी गारंटी नहीं है, क्योंकि युवाओं का एक विशाल बहुमत अब भी अपनी पूरी क्षमता का एहसास नहीं कर पा रहा है।

मानव पूंजी की कमी इसका एक प्रमुख कारण है। शिक्षा और विपणन कौशल मानव पूंजी के प्रमुख तत्व हैं। इसके बिना बदलती विश्व व्यवस्था में उभरते हुए नए अवसरों का लाभ नहीं उठाया जा सकता। थोड़े लोग हैं, जो इन नए अवसरों के लिए जरूरी कौशल से लैस हैं और उनका लाभ उठा रहे हैं। उम्मीद करनी चाहिए कि इस वर्ष हम बाकी लोगों के बारे में विचार करेंगे, जो देश में और देश के बाहर उभरते अवसरों का लाभ उठाने के योग्य नहीं हैं।

ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय में रॉयल बैंक रिसर्च प्रोफेसर ऑफ इकनॉमिक्स अमर्त्य लाहिड़ी ने हाल ही में कहा है, श्हर साल भारत की श्रम शक्ति में 80 लाख से एक करोड़ तक नए श्रमिक जुड़ते हैं। एक दशक तक यह गति जारी रहेगी। इन नए श्रमिकों में से अधिकांश हाई स्कूल या बेहतर शैक्षणिक योग्यताओं से लैस होकर आ रहे हैं। इसलिए उनकी अपेक्षाएं आनुपातिक रूप से ज्यादा हैं और भारत की उपलब्धि के अंततः अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने के सामान्य राष्ट्रीय आख्यान से और ज्यादा उत्साहित हैं।

पर आकांक्षाएं हमेशा जमीनी वास्तविकता से मेल नहीं खातीं। लाहिड़ी के मुताबिक, श्असली समस्या कौशल की कमी की है। इस समय भारत करीब 22 लाख ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट और पीएच.डी. धारक पैदा करता है। दुर्भाग्य से उनमें से अधिकांश प्रशिक्षण पाने के बावजूद रोजगार के लिए अयोग्य हैं। कुशल श्रमिकों का एक समूह तैयार करने के लिए उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के लिए निरंतर निवेश की आवश्यकता होगी, ताकि उन्हें इन उच्च मानव पूंजी के क्षेत्रों में अच्छे वेतन की नौकरी मिल सके।

हाल के वर्षों में युवाओं को हुनरमंद बनाने और उनका कौशल बढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। डिजिटल इंडिया पहल के तहत भी कई कार्यक्रम चल रहे हैं। लाखों युवा अब डिजिटल रूप से अधिक समझदार व शिक्षित हैं, पर देश के विभिन्न हिस्सों में अंतर बना हुआ है। जैसे, उत्तरी और दक्षिणी राज्यों और पुरुषों एवं महिलाओं के बीच भारी असमानता है। लाखों भारतीय अब भी स्कूल की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते। मई, 2023 तक देश में साइबर सुरक्षा पेशेवरों के लिए 40,000 रिक्तियां थीं, पर भारतीय भर्ती और मानव संसाधन सेवा कंपनी टीमलीज सर्विसेज की सहायक कंपनी टीमलीज डिजिटल के अनुसार, कौशल की भारी कमी के कारण इनमें से 30 फीसदी रिक्तियां भरी नहीं जा सकीं। पिछले वर्ष मार्च में सांख्यिकी व कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी मल्टीपल इंडिकेटर सर्वे के अनुसार, भारत को सूचना एवं संचार तकनीक (आईसीटी) से संबंधित कुशल पेशेवरों की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है। 11,63,416 लोगों के सैंपल पर आधारित इस डाटा से पता चला कि सभी आयु समूहों में महिलाओं की तुलना में पुरुषों के पास आईसीटी कौशल अधिक है। सर्वे में शामिल 15 से 29 वर्ष के आयु के और केवल 27 फीसदी लोगों ने कहा कि वे दस्तावेज, तस्वीर और वीडियो के साथ ईमेल भेजना जानते हैं। यदि आप इसे राज्यवार देखें, तो तमिलनाडु में 47.1 फीसदी ग्रामीण युवा यह कर सकते हैं, जबकि बिहार में मात्र 17.8 फीसदी। विशेष प्रोग्रामिंग भाषा का उपयोग कर कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार करने वाले का प्रतिशत कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में ज्यादा है। देश की एक चौथाई से ज्यादा आबादी 15 से 29 वर्ष के युवाओं की है। इस आबादी में आईसीटी कौशल की कमी तेजी से बढ़ती डिजिटल दुनिया में बड़ी चुनौती है। इस वर्ष इस पर ध्यान केंद्रित करना होगा कि हर युवा को उसकी क्षमता और

हमलों में 5 लोग मारे गए, 6 घायल हुए, अमेरिका और ब्रिटेन को हूती विद्रोहियों की धमकी–

हूतियों ने कहा कि हमलों में कम से कम पांच लोग मारे गए और छह घायल हो गए, बिना यह बताए कि क्या निशाना बनाया गया था। जैसे ही ईरान समर्थित विद्रोहियों के कब्जे वाले कई ठिकानों पर बमबारी हुई, सऊदी अरब ने तुरंत खुद को हमलों से दूर करने की कोशिश की क्योंकि वह ईरान के साथ एक नाजुक सौहार्द बनाए रखना चाहता है और यमन युद्ध में संघर्ष विराम चाहता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम द्वारा यमन में हूती सैन्य ठिकानों के खिलाफ हवाई और समुद्र से हमले शुरू करने के बाद, आतंकवादी संगठन ने शुक्रवार को चेतावनी दी कि हमलावरों को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। हूती उप विदेश मंत्री हुसैन अल–एजी ने कहा कि अमेरिका और ब्रिटेन यमन के खिलाफ घोर आक्रामकता के लिए भारी कीमत चुकाएंगे। हमारे देश पर अमेरिकी और ब्रिटिश जहाजों, पनडुब्बियों और युद्धक विमानों द्वारा बड़े पैमाने पर आक्रामक हमला किया गया था और अमेरिका और ब्रिटेन को निस्संदेह भारी कीमत चुकाने और इस जबरदस्त आक्रामकता के सभी गंभीर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना होगा। हूतियों ने कहा कि हमलों में कम से कम पांच लोग मारे गए और छह घायल हो गए, बिना यह बताए कि क्या निशाना बनाया गया था। जैसे ही ईरान समर्थित विद्रोहियों के कब्जे वाले कई ठिकानों

पर बमबारी हुई, सऊदी अरब ने तुरंत खुद को हमलों से दूर करने की कोशिश की क्योंकि वह ईरान के साथ एक नाजुक सौहार्द बनाए रखना चाहता है और यमन युद्ध में संघर्ष विराम चाहता है। हमले के बाद बाइडेन ने कहा कि अगर जरूरत पड़ी तो वह आगे की सैन्य कार्रवाई का आदेश देने में झिझकेंगे नहीं। बाइडेन ने कहा कि ये लक्षित हमले एक स्पष्ट संदेश हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका और हमारे साझेदार हमारे कर्मियों पर हमले बर्दाश्त नहीं करेंगे या शत्रुतापूर्ण अभिनेताओं को नेविगेशन की स्वतंत्रता को खतरे में डालने की अनुमति नहीं देंगे।

लौट कर अमेरिका रूस पर आया, कभी भारत को दिया था ज्ञान, अब 17 माह बाद तेल आयात करना फिर से शुरू कर दिया

अमेरिकी ऊर्जा सूचना प्रशासन (ईआईए) के अनुसार, अमेरिका ने अक्टूबर में 36,800 बैरल और नवंबर में 9,900 बैरल रूसी तेल का आयात किया, जिनकी कीमत क्रमशः 2.7 मिलियन डॉलर और 749,500 डॉलर थी। आयात अमेरिकी ट्रेजरी विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) द्वारा दिए गए विशिष्ट लाइसेंसों द्वारा संभव हुआ, जो प्रतिबंधों के प्रवर्तन की देखरेख करता है। यूक्रेन में सैन्य हस्तक्षेप को लेकर मॉस्को पर लगाए गए प्रतिबंधों के बावजूद, अमेरिका ने एक साल से अधिक समय में पहली बार रूस से तेल आयात करना फिर से शुरू कर दिया है। अमेरिकी ऊर्जा सूचना प्रशासन (ईआईए) के अनुसार, अमेरिका ने अक्टूबर में 36,800 बैरल और नवंबर में 9,900 बैरल रूसी तेल का आयात किया, जिनकी कीमत क्रमशः 2.7 मिलियन डॉलर और 749,500 डॉलर थी। आयात अमेरिकी ट्रेजरी विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) द्वारा दिए गए विशिष्ट लाइसेंसों द्वारा संभव हुआ, जो प्रतिबंधों के प्रवर्तन की देखरेख करता है। ईआईए डेटा से यह भी पता चला है कि अमेरिका ने रूसी तेल के लिए प्रीमियम का भुगतान किया है, क्योंकि अक्टूबर में एक बैरल की कीमत 74 डॉलर और नवंबर में 76 डॉलर थी, जो 2022 में अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा निर्धारित 60 डॉलर प्रति बैरल की ष्मूल्य सीमाष से काफी ऊपर है। मूल्य सीमा क्रीमिया पर कब्जे और पूर्वी यूक्रेन में अलगाववादियों के समर्थन की प्रतिक्रिया के रूप में तेल निर्यात

से रूस की आय को कम करने के लिए अमेरिका, जी7 देशों, यूरोपीय संघ, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रेलिया के समन्वित प्रयास का हिस्सा थी। अमेरिका ने मार्च 2022 में रूस से तेल, गैस और अन्य ऊर्जा संसाधनों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया, साथ ही रूसी व्यक्तियों, संस्थाओं और क्षेत्रों को लक्षित करने वाले अन्य प्रतिबंध भी लगाए। हालाँकि, ओएफएसी के पास कुछ लेनदेन के लिए लाइसेंस जारी करने का अधिकार है जो अन्यथा मामले–दर–मामले आधार पर प्रतिबंधों द्वारा निषिद्ध हैं। रूसी तेल का आयात फिर से शुरू करने के अमेरिकी फैसले के पीछे के कारण स्पष्ट नहीं हैं लेकिन कुछ विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया है कि यह वैश्विक ऊर्जा संकट, चीन के साथ भू–राजनीतिक तनाव या यूक्रेन संघर्ष को सुलझाने के राजनयिक प्रयासों से संबंधित हो सकता है

चीन से लौटते ही मुइज्जू ने दे दिया बड़ा बयान, मालदीव पर बड़े एक्शन की तैयारी में भारत!

सरकार का सबसे ज्यादा जोर टूरिज्म इंफ्रास्ट्रक्चर पर है। इसके लिए सरकार ने प्लान भी तैयार किया है। इसके तहत अगले पांच साल में लक्षद्वीप में टूरिज्म इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने के लिए 6 हजार करोड़ रुपए खर्च करने की योजना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लक्षद्वीप की यात्रा और मालदीव के मंत्रियों की विवादित टिप्पणियों के अरब सागर में स्थित 36 द्वीपों वाला ये केंद्र शासित प्रदेश दुनियाभर में सुर्खियों में आ गया है। लक्षद्वीप में पर्यटन विकास के लिए नई योजनाओं पर काम शुरू भी हो गया है। सरकार का सबसे ज्यादा जोर टूरिज्म इंफ्रास्ट्रक्चर पर है। इसके लिए सरकार ने प्लान भी तैयार किया है। इसके तहत अगले पांच साल में लक्षद्वीप में टूरिज्म इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने के लिए 6 हजार करोड़ रुपए खर्च करने की योजना है। लक्षद्वीप की प्राकृतिक खूबसूरती का पूरा देश कायल हो चुका है और मालदीव इससे जल रहा है। दूसरे राज्यों से फ्लाइट कनेक्टिविटी साथ ही बढ़ते पर्यटकों की संख्या को देखते हुए बड़ा एयरपोर्ट विकसित किया जाएगा। अभी सबसे ज्यादा फोकस मिनिकाय द्वीप को विकसित करने पर है और यहीं पर एयरपोर्ट बनाने की तैयारी है। साथ ही दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरू से कनेक्टिंग फ्लाइट की तैयारी भी की जा रही है। 360 से ज्यादा लगून विला विकसित किया जा रहासरकार लक्षद्वीप में 360 से ज्यादा लगून विला विकसित कर रही है। लक्षद्वीप प्रशासन ने केंद्र सरकार से एक और पानी के जहाज की मांग की है। साथ ही कोच्चि के अलावा केरल के बेपोर पोर्ट और कर्नाटक के मैंगलोर पोर्ट से भी कनेक्टिविटी की मांग की जा रही है। स्कूबाडाइविंग के अलावा लक्षद्वीप के बीच लोगों को बहुत भा रहे हैं और लोग बड़ी संख्या में यहां पहुंच रहे हैं। चीन से लौट कर मोइज्जू ने क्या कहा? भारत से विवाद के बीच चीन दौरे पर गए मालदीव के राष्ट्रपति मोइज्जु के तेवर बदले–बदले नजर आ रहे हैं। उन्होंने कहा है कि हम बाहरी हस्तक्षेप का पूरजोर विरोध करेंगे। बता दें कि मालदीव के राष्ट्रपति मोइज्जू पांच दिन बीजिंग में रहे और चीनी नेताओं व उनकी मेहमाननवाजी की जमकर तारीफ की है। मोइज्जू ने इस दौरान चीन के साथ कई अहम समझौते भी किए हैं।

लाल और अरब सागर में हमले, हूतियों पर यू–एस की स्ट्राइक, बढ़ते वैश्विक तनाव के बीच जयशंकर ईरान यात्रा से निकालेंगे समाधान ?

जयशंकर साल के अंत में पांच दिनों के लिए रूस में थे और 10 जनवरी को वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन के मौके पर संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के साथ बैठक के दौरान प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा थे। गाजा में हमास पर इजरायल के युद्ध और लाल और अरब सागर में वाणिज्यिक शिपिंग पर शिया हूती मिलिशिया के लगातार हमलों के मद्देनजर, विदेश मंत्री एस जयशंकर वैश्विक चिंताओं को कम करने में नेतृत्व के साथ जुड़ने के लिए कुछ दिनों में ईरान जाने वाले हैं। ईरानी नेतृत्व से मिलने के लिए मंत्री जयशंकर की यात्रा अमेरिकी–ब्रिटेन बलों द्वारा

गुरुवार रात दक्षिण यमन में ड्रोन, मिसाइल और रडार साइटों सहित हूती सैन्य ठिकानों पर हमला करने के बाद हुई है, जिनका उपयोग लाल सागर और अदन की खाड़ी में वाणिज्यिक शिपिंग को लक्षित करने के लिए किया गया था। विदेश मंत्री ने मध्य पूर्व में बढ़ती स्थिति और वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए मिसाइल खतरे के बारे में कल रात अमेरिकी विदेश मंत्री एंथनी ब्लिंकन से भी बात की। जयशंकर साल के अंत में पांच दिनों के लिए रूस में थे और 10 जनवरी को वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन के मौके पर संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के साथ बैठक के दौरान प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा थे। भारत ने संपर्क बनाए रखा है उभरते संकट पर मध्य–पूर्व की शक्तियों के साथ, जिसमें सऊदी अरब जैसे प्रमुख खिलाड़ी भी शामिल हैं। समझा जाता है कि अपनी यात्रा के दौरान विदेश मंत्री जयशंकर अपने समकक्ष होसैन अमीर–अब्दुल्लाहेन से मुलाकात करेंगे और ईरानी राष्ट्रपति इब्राहिम रायसी से भी मुलाकात करने की कोशिश करेंगे बातचीत स्पष्ट होने की उम्मीद है क्योंकि भारत गाजा में बिगड़ती मानवीय स्थिति के साथ–साथ भारतीय तट पर एमवी केम प्लूटो जैसे वाणिज्यिक जहाजों पर गोला–बारूद और शहीद 136 जैसे लंबी दूरी के ड्रोन का उपयोग करके हौथी हमलों को लेकर चिंतित है। जबकि दोनों पक्ष गाजा में हमास पर इजरायली युद्ध के परिणामों को रोकने के बारे में स्पष्ट विचारों की उम्मीद कर रहे हैं, भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि फिलिस्तीनी कारण किसी भी तरह से हमास द्वारा दक्षिण इजरायल में 7 अक्टूबर के नरसंहार को उचित नहीं ठहराता है आतंकवादी. ईरानी नेतृत्व के साथ बातचीत और उनके विचार रचनात्मक होंगे क्योंकि तेहरान क्षेत्र में हौथिस, हमास, हिजबुल्लाह और कैताब हिजबुल्लाह के पीछे की ताकत है।

अफगानिस्तान में 24 घंटे के अंदर तीन बार कांपी धरती, देश में भूकंप से सदमे में लोग

12 जनवरी को तड़के अफगानिस्तान के हिंदूकुश क्षेत्र में रिक्टर पैमाने पर 4.4 तीव्रता का भूकंप आने के कुछ घंटों बाद अफगानिस्तान में एक नया भूकंप आया। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के मुताबिक, ताजा भूकंप सुबह 9.40 बजे आया और 180 किलोमीटर की गहराई पर था। 12 जनवरी को तड़के अफगानिस्तान के हिंदूकुश क्षेत्र में रिक्टर पैमाने पर 4.4 तीव्रता का भूकंप आने के कुछ घंटों बाद अफगानिस्तान में एक नया भूकंप आया। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के मुताबिक, ताजा भूकंप सुबह 9.40 बजे आया और 180 किलोमीटर की गहराई पर था। इससे पहले भूकंप सुबह 4.51 बजे आया और 17 किलोमीटर की गहराई पर था। क्षति या हताहत की कोई रिपोर्ट नहीं थी। कल दोपहर 2.50 बजे अफगानिस्तान के इसी क्षेत्र में 6.1 तीव्रता का भूकंप आया। भूकंप के झटके दिल्ली और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों, पाकिस्तान के लाहौर और पुंछ सहित जम्मू–कश्मीर के कुछ हिस्सों में भी महसूस किए गए।आपको बता दें कि अफगानिस्तान के पश्चिम में पिछले साल अक्टूबर में आये 6.3 तीव्रता के भूकंप में सात लोगों की मौत हो गई थी, जबकि हजारों घायल हो गए थे। इस आपदा में जीवित बचे लोग तीन माह बाद भी अपने जिंदगी को पटरी पर लाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हेरात प्रांत में आये भूकंप ने जिंदा जान जिले में सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया था, इस जिले में ऐसा कोई घर नहीं बचा है, जो सही सलामत हो। ऐसे में अब यहां कई परिवार तंबुओं में रह रहे हैं। लोग फिलहाल दान में मिली धनराशि की मदद से अपना गुजारा कर रहे हैं, लेकिन भविष्य को लेकर काफी चिंचित हैं,

मिडिल ईस्ट में घिरा अमेरिका, हिज्बुल्लाह कर सकता है अटैक

हिज्बुल्ला–इजरायल टकराव से अमेरिकी एजेंसियां चिंतित हैं। विदेश में अमेरिकी सैनिकों या राजयिकों पर हमले का डर उसे सताने लगा है। बता दें कि ईरान समर्थित समूह की तरफ से पहले से ही अमेरिकी बेस को निशाना बनाया जा रहा है। अमेरिका के ठिकानों पर हिज्जबुल्ला हमला कर सकता है। हिज्जबुल्ला को लेकर अमेरिकी खुफिया विभाग ने चेतावनी दी है। मिडिल ईस्ट में अमेरिकी बेस पर हिज्जबुल्ला की नजर बनी हुई है। पॉलिटिको की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि हिज्बुल्ला–इजरायल टकराव से अमेरिकी एजेंसियां चिंतित हैं। विदेश में अमेरिकी सैनिकों या राजयिकों पर हमले का डर उसे सताने लगा है। बता दें कि ईरान समर्थित समूह की तरफ से पहले से ही अमेरिकी बेस को निशाना बनाया जा रहा है। बता दें कि बीते हफ्ते ही लेबनान के हिजबुल्लाह ने इजरायली सैन्य अड्डे पर 60 से अधिक रॉकेट दागे। समूह ने कहा कि इस हमले को बेरूत में हमास के उप नेता की हत्या की प्रतिक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है। ईरान समर्थित समूह ने कहा कि महान नेता शेख सालेह अल–अरुरी की हत्या के अपराध की प्रारंभिक प्रतिक्रिया के हिस्से के रूप में विभिन्न प्रकार की मिसाइलों से मेरोन वायु नियंत्रण अड्डे को निशाना बनाया गया। 7 अक्टूबर को इजराइल–हमास युद्ध शुरू होने के बाद से

इजराइल–लेबनान सीमा पर मुख्य रूप से इजराइली बलों और हमास के सहयोगी हिजबुल्लाह के बीच नियमित रूप से गोलीबारी देखी जा रही है। हिज्बुल्लाह के नाम का अर्थ है ईश्वर की पार्टी और ये लेबनान का एक शिया इस्लामी आतंकवादी संगठन है। थिंक टैंक सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज (सीएसआईएस) ने इसे दुनिया का सबसे भारी हथियारों से लैस गैर–राज्य संगठन के रूप में वर्णित किया है, जिसके पास बिना निर्देशित तोपखाने रॉकेटों के साथ–साथ बैलिस्टिक, एंटीएयर, एंटीटैंक और एंटीशिप मिसाइलों का एक बड़ा और विविध भंडार है।

हूती विद्रोहियों पर अमेरिका-ब्रिटेन की सबसे बड़ी एयर स्ट्राइक, गूंज उठा लाल सागर

बाइडेन ने कहा कि ये लक्षित हमले एक स्पष्ट संदेश हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका और हमारे साझेदार हमारे कर्मियों पर हमले बर्दाश्त नहीं करेंगे या शत्रुतापूर्ण अभिनेताओं को नेविगेशन की स्वतंत्रता को खतरे में डालने की अनुमति नहीं देंगे। संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन ने यमन में हूती आंदोलन से जुड़ी साइटों के खिलाफ हमले शुरू किए। ये कदम ईरान समर्थित समूह द्वारा पिछले साल के अंत में लाल सागर में अंतरराष्ट्रीय शिपिंग

कूटनीति बेअसर रही तो यूएन ब्रिटेन ने हूतियों को कूटना शुरू कर दिया,

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा है कि यह हमले एक स्पष्ट संदेश हैं कि अमेरिका और हमारे साझेदार हमारे लोगों पर हमले बर्दाश्त नहीं करेंगे या व्यापार मार्ग अथवा समुद्री मार्ग से आवाजाही की स्वतंत्रता को खतरे में डालने की अनुमति नहीं देंगे। लाल सागर में आतंक का पर्याय बन चुके हूतियों पर अमेरिका और ब्रिटेन ने मिलकर धावा बोल दिया है जिससे पहले से ही इजराइल और हमास के बीच चल रही लड़ाई का विस्तार होने का अंदेशा बढ़ गया है। हम आपको बता दें कि यमन में हूतियों के सैन्य ठिकानों पर हवाई और समुद्री मार्ग से जोरदार हमले किये गये हैं जिससे समुद्री आतंकियों के होश उड़ गये हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने गुरुवार देर रात एक बयान में आगाह किया था कि यदि जरूरत पड़ी तो वह सख्त कार्रवाई करने में जरा भी संकोच नहीं करेंगे। इसी के बाद यह हमले किये गये हैं। खास बात यह है कि इन हमलों के बीच ही भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर और अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने भी चर्चा की है।दूसरी ओर, यमन में लोगों ने पूरे देश में विस्फोटों की पुष्टि की है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हमले में सना हवाई अड्डे से सटे एक सैन्य अड्डे, ताइज हवाई अड्डे के पास एक सैन्य स्थल, होदेइदाह में एक हूती नौसैनिक अड्डे और हज्जाह गवर्नरेट में सैन्य स्थलों को निशाना बनाया गया। देखा जाये तो ये हमले 2016 के बाद से यमनी क्षेत्र पर पहला हमला है। हालाँकि अमेरिका ने कहा कि तनाव बढ़ाने का कोई इरादा नहीं है, लेकिन हूतियों ने हमले का जवाब देने की कसम खाई है। इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा है कि यह हमले एक स्पष्ट संदेश हैं कि अमेरिका और हमारे साझेदार हमारे लोगों पर हमले बर्दाश्त नहीं करेंगे या व्यापार मार्ग अथवा समुद्री मार्ग से आवाजाही की स्वतंत्रता को खतरे में डालने की अनुमति नहीं देंगे। वहीं अस्पताल में भर्ती अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड

ऑस्टिन ने भी एक बयान में कहा है कि हमलों ने ड्रोन, बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलों, तटीय रडार और हवाई निगरानी सहित हूतियों की अन्य सैन्य क्षमताओं को निशाना बनाया है। अमेरिका ने कहा है कि ऑस्ट्रेलिया, बहरीन, कनाडा और नीदरलैंड ने इस ऑपरेशन का समर्थन किया है। अमेरिका का कहना है कि हमारे साझेदारों ने यूरोप तथा एशिया के बीच प्रमुख समुद्री मार्ग लाल सागर में व्यापारिक जहाजों के मुक्त प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय प्रयास के हिस्से के रूप में ऐसी कार्रवाई की मांग की थी। अमेरिका का कहना है कि इस मार्ग पर विश्व का 15 प्रतिशत से ज्यादा शिपिंग यातायात होता है ऐसे में उसे बाधित करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। अमेरिका ने ईरान पर लाल सागर में हूतियों के हमलों में सक्रिय रूप से शामिल होने का आरोप तो लगाया ही है साथ ही हमलों को अंजाम देने के लिए उनकी सैन्य क्षमताएं बढ़ाने और हूतियों को खुफिया जानकारी प्रदान करने का आरोप भी ईरान पर लगाया है। एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने संवाददाताओं से कहा, ष्हमारा मानना है कि वे यानि ईरान निश्चित रूप से इसके हर चरण में शामिल रहे हैं।ष उन्होंने कहा कि हमले विमान, जहाज और पनडुब्बी द्वारा किए गए। यमन में हमलों के बारे में अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि एक दर्जन से अधिक स्थानों को निशाना बनाया गया था और हमलों का उद्देश्य केवल प्रतीकात्मक होने की बजाय हूतियों की सैन्य क्षमताओं को कमजोर करना था। एक अमेरिकी सैन्य अधिकारी ने कहा, ष्हम सटीक हथियारों के साथ बहुत विशिष्ट स्थानों पर बहुत विशिष्ट क्षमता को निशाना बना रहे थे। दूसरी ओर, ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय ने भी एक बयान में कहा है कि ष्शुरुआती संकेत हैं कि व्यापारिक जहाजों को नुकसान पहुँचाने की हूतियों की क्षमता को जोरदार झटका लगा है।श्श इस बीच, हूतियों के प्रवक्ता ने कहा है कि इन हमलों का कोई औचित्य नहीं है और वह इजराइल की ओर जाने वाले जहाजों को निशाना बनाना जारी रखेगा। हूतियों का कहना है कि लाल सागर में शिपिंग मार्गों पर हमले फिलिस्तीनियों और गाजा को नियंत्रित करने वाले इस्लामी समूह हमास के प्रति समर्थन का प्रदर्शन हैं। एक हूती अधिकारी ने राजधानी सना के साथ–साथ सादा और धमार शहरों और होदेइदा प्रांत में हमलों की पुष्टि की है और इसे अमेरिका तथा ब्रिटिश आक्रामकता करार दिया है।इस बीच, हमले को लेकर प्रतिक्रियाओं का दौर भी शुरू हो गया है। रूस ने कहा है कि उसने सैन्य हमलों पर चर्चा के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की तत्काल बैठक बुलाने का अनुरोध किया है। उधर, हूतियों का समर्थन करने वाले ईरान ने इन हमलों की कड़ी निंदा की है। इस बीच, लंदन के किंग्स कॉलेज में एंड्रियास क्रेग ने कहा, ष्चिंता यह है कि यह हमला बढ़ सकता है।ष उन्होंने जोखिम की चेतावनी देते हुए कहा कि सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात भी टकराव में शामिल हो सकते हैं। हमलों के बाद एक बयान में, सऊदी अरब ने संयम बरतने और ष्बढ़ने से बचनेष का आह्वान किया है। वहीं अमेरिकी कांग्रेस में प्रमुख रिपब्लिकन ने इस कदम का स्वागत किया,

को निशाना बनाना शुरू करने के बाद सामने आया है राष्ट्रपति जो बाइडेन ने गुरुवार देर रात एक बयान में आगाह किया कि अगर जरूरत पड़ी तो वह आगे की कार्रवाई करने में संकोच नहीं करेंगे। बाइडेन ने कहा कि ये लक्षित हमले एक स्पष्ट संदेश हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका और हमारे साझेदार हमारे कर्मियों पर हमले बर्दाश्त नहीं करेंगे या शत्रुतापूर्ण अभिनेताओं को नेविगेशन की स्वतंत्रता को खतरे में डालने की अनुमति नहीं देंगे ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि शुरुआती संकेत हैं कि व्यापारी जहाजरानी को धमकाने की हौथिस की क्षमता को झटका लगा है। हूती अधिकारी ने राजधानी साना के साथ–साथ सादा और धमार शहरों के साथ–साथ होदेइदा प्रांत में छापेमारी की पुष्टि करते हुए इसे अमेरिकी–जायोनी–ब्रिटिश आक्रामकता बताया। चल रहे हमले अक्टूबर में शुरू होने के बाद से मध्य पूर्व में इजराइल–हमास युद्ध के विस्तार के अब तक के सबसे नाटकीय प्रदर्शनों में से एक हैं। एक अमेरिकी अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि हमले विमान, जहाज और पनडुब्बी द्वारा किए जा रहे थे। अधिकारी ने कहा कि एक दर्जन से अधिक स्थानों को निशाना बनाया गया और हमलों का उद्देश्य हौथी की सैन्य क्षमताओं को कमजोर करना था और ये सिर्फ प्रतीकात्मक नहीं थे। हूती यमन के अधिकांश हिस्से को नियंत्रित करते हैं। हूतियों ने लाल सागर शिपिंग मार्गों पर अपने मिसाइल और ड्रोन हमलों को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय कॉलों को खारिज कर दिया और ऐसा करने में विफल रहने पर संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर से परिणाम भुगतने की चेतावनी दी।

अफगानिस्तान के खिलाफ दूसरे टी20 से बाहर होंगे तिलक वर्मा, आकाश चोपड़ा ने दिया जवाब

लक्ष्य का पीछा करते हुए रोहित शर्मा और तिलक वर्मा को छोड़कर सभी भारतीय बल्लेबाजों ने अच्छी बल्लेबाजी की। इसी बीच भारतीय पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने तिलक वर्मा के दूसरे टी20 में खेलने और न खेलने को लेकर बड़ा बयान दिया है। भारतीय क्रिकेट टीम ने भारत बनाम अफगानिस्तान पहले टी20 में शानदार 6 से जीत दर्ज की। केवल 17.3 ओवर में लक्ष्य का पीछा करते हुए रोहित शर्मा और तिलक वर्मा को छोड़कर सभी भारतीय बल्लेबाजों ने अच्छी बल्लेबाजी की। इसी बीच भारतीय पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने तिलक वर्मा के दूसरे टी20 में खेलने और न खेलने को लेकर बड़ा बयान दिया है। चलिए जानते हैं क्या बोले चोपड़ा? तिलक वर्मा की जगह के बारे में बात करते हुए चोपड़ा ने अपने शो क्रिकेट चौपाल में कहा, क्या तिलक वर्मा अगला मैच खेलेंगे या नहीं? मुझे नहीं लगता कि वह ऐसा करेगा। मुझे लगता है कि उसे हटा दिया जाएगा। क्योंकि अगर विराट कोहली और यशस्वी जयसवाल उपलब्ध होंगे तो टीम से बाहर कौन जाएगा? शिवम दुबे और रिंकू सिंह बाहर नहीं जा रहे हैं, मैं शुभमन गिल के बारे में अनिश्चित हूं लेकिन मुझे लगता है कि तिलक वर्मा को हटाया जा सकता है। रोहित पहले ही ओवर में रन

आउट हो गए। दूसरी ओर वर्मा ने 22 गेंदों में सिर्फ 26 रन बनाए और एक समय उनका स्कोर 10 (15) था। उनकी धीमी शुरुआत से फैंस नाराज नजर आए, जबकि दूसरे छोर पर शुभमन गिल पूरे जोश के साथ खेलते हुए नजर आए।

आईसीसी के सीईओ श्रीलंका की हुइ के राष्ट्रपति और खेल मंत्री से मुलाकात, टीम पर लगे इंटरनेशनल बैन को हटाने पर हुई बातचीत

पिछले साल नवंबर में तत्कालीन खेलमंत्री रोशन रणसिंघे ने समूचे श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड को भंग करके पूर्व कप्तान अर्जुन रणतुंगा की अध्यक्षता में अंतरिम समिति का गठन किया था। इस फैसले पर हालांकि अदालत ने रोक लगा दी। आईसीसी ने भी श्रीलंका क्रिकेट को निलंबित कर दिया था। कोलंबो। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के सीईओ जैफ अलार्डिस ने हाल ही में श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे और खेलमंत्री हारिन फर्नांडो से 'सार्थक' बातचीत की है जिसके बाद श्रीलंका क्रिकेट ने उस पर लगा अंतरराष्ट्रीय निलंबन वापिस लिये जाने की उम्मीद जताई है। आईसीसी ने श्रीलंका क्रिकेट के कामकाज में राजनीतिक दखल का हवाला देकर पिछले साल नवंबर में उसे निलंबित कर दिया था। श्रीलंका मेंहोने वाला अंडर 19 विश्व कप भी दक्षिण अफ्रीका में आयोजित कराने का फैसला लिया गया। अलार्डिस से बैठक के बाद फर्नांडो ने एक्स पर पोस्ट किया कि उनकी बातचीत सार्थक रही। अलार्डिस अब आईसीसी बोर्ड को रिपोर्ट देंगे जिसकी बैठक मार्च में होनी है। इससे पहले पिछले साल जून में आईसीसी उपाध्यक्ष इमरान ख्वाजा ने भी श्रीलंका का दौरा किया था।

अफगानिस्तान के खिलाफ पहले टी20 मैच में यशस्वी चोटिल होने से टीम से बाहर, संजू को मौका नहीं

भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। भारत ने यशस्वी जायसवाल, संजू सैमसन, आवेश खान और कुलदीप यादव को अंतिम एकादश में नहीं रखा है। दरअसल, यशस्वी जायसवाल चोट के कारण इस मैच में नहीं खेल रहे हैं जिससे रोहित के साथ शुभमन गिल पारी का आगाज करेंगे। वहीं संजू सैमसन को भी इस मुकाबले में मौका नहीं मिला है। वहीं इसका पहला मुकाबला मोहाली में खेला जा रहा है। जहां, भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। भारत ने यशस्वी जायसवाल, संजू सैमसन, आवेश खान और कुलदीप यादव को अंतिम एकादश में नहीं रखा है। दरअसल, यशस्वी जायसवाल चोट के कारण इस मैच में नहीं खेल रहे हैं जिससे रोहित के साथ शुभमन गिल पारी का आगाज करेंगे। वहीं संजू सैमसन को भी इस मुकाबले में मौका नहीं मिला है। वहीं कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस के दौरान बताया था कि, यशस्वी जायसवाल दर्द के कारण से इस मैच का हिस्सा नहीं हैं। इसके अलावा विकेटकीपर के तौर पर टीम मैनेजमेंट जितेश शर्मा के साथ गई है। संजू सैमसन को बतौर बल्लेबाज भी मौका नहीं मिला है। क्योंकि वहां शिवम दुबे को रखा है। बोर्ड ने जायसवाल को लेकर अपडेट दी है कि वह कमर के निचले हिस्से में दर्द की वजह से पहले मैच से बाहर हो गए हैं। अफगानिस्तान के खिलाफ टीम इंडिया की प्लेइंग इलेवन रोहित शर्मा (कप्तान), शुबमन गिल, तिलक वर्मा, शिवम दुबे, रिंकू सिंह, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, अर्शदीप सिंह, रवि बिश्नोई, मुकेश कुमार

विगवैस लीग में हेलिकाप्टर से मैदान में उतरेंगे–वार्नर

वॉर्नर ने पिछले सप्ताह अपने घरेलू मैदान एससीजी पर आखिरी टेस्ट खेला जिसमें आस्ट्रेलिया ने जीत दर्ज की। वॉर्नर वनडे को अलविदा कह चुके हैं लेकिन टी20 खेलते रहेंगे। सिडनी थंडर्स का सामना शुक्रवार को सिडनी सिक्सर्स से होगा। वॉर्नर ने पिछले सत्र में थंडर्स के साथ दो साल का करार किया था। सिडनी। टेस्ट क्रिकेट से डेविड वॉर्नर के संन्यास का जश्न जारी है और यह आक्रामक बल्लेबाज बिग बैश लीग में सिडनी थंडर्स के लिये मैच खेलने हेलिकॉप्टर से एससीजी उतरेंगे। हंटर वैली में अपने भाई की शादी से वॉर्नर सीधे हेलिकॉप्टर से आयेंगे जिस पर 'थैंक्स डेव' लिखा होगा। थंडर के तेज गेंदबाज गुरिंदर संधू ने ईएसपीएन क्रिकइन्फो से कहा ,'' वह हमारे लिये खेलने के लिये काफी मेहनत कर रहा है।'' वॉर्नर ने पिछले सप्ताह अपने घरेलू मैदान एससीजी पर आखिरी टेस्ट खेला जिसमें आस्ट्रेलिया ने जीत दर्ज की। वॉर्नर वनडे को अलविदा कह चुके हैं लेकिन टी20 खेलते रहेंगे। सिडनी थंडर्स का सामना शुक्रवार को सिडनी सिक्सर्स से होगा। वॉर्नर ने पिछले सत्र में थंडर्स के साथ दो साल का करार किया था।

टॉस करने का ऐसा अनोखा तरीका नहीं देखा होगा

फ्रांसिस मैके ने महिला सुपर स्मैश लीग में टॉस करने का एक अनोखा तरीका चुना है। दरअसल, मैके मौजूदा सीजन में कैंटरबरी मैजिशियंस का नेतृत्व कर रही हैं और 11 जनवरी को वे वेलिंगटन विमेन के साथ भिड़ेंगे। टॉस के दौरान, 33 वर्षीय खिलाड़ी ने सिक्का उछालने के बजाय फेंक कर टॉस करना पसंद किया और हेड्स चुना। न्यूजीलैंड की क्रिकेटर फ्रांसिस मैके ने महिला सुपर स्मैश लीग में टॉस करने का एक अनोखा तरीका चुना है। दरअसल, मैके मौजूदा सीजन में कैंटरबरी मैजिशियंस का नेतृत्व कर रही हैं और 11 जनवरी को वे वेलिंगटन विमेन के साथ भिड़ेंगे। टॉस के दौरान, 33 वर्षीय खिलाड़ी ने सिक्का उछालने के बजाय फेंक कर टॉस करना पसंद किया और हेड्स चुना। हालांकि, मैके टॉस हार गई लेकिन उनका अनोखे

तरीके का टॉस करना सोशल मीडिया पर छा गया। वहीं जब फ्रांसिस मैके से टॉस के बाद सिक्का उछालने की बजाय फेंकने का कारण पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया कि, मुझे चीजों को अलग तरीके से करने में मजा आता है। हमें पिछले कुछ मैचों में वैसी हरियाली नहीं मिली जैसा हम चाहते हैं। इसलिए, चीजों के बदलें और देखें कि क्या ये हमारे लिए बाकी दिन में चीजों को बदलता है। बाद में खेल में, वेलिंगटन की कप्तान अमेलिया केर ने 77 रनों की नाबाद पारी खेली, क्योंकि उनकी टीम ने 6 विकेट के नुकसान पर कुल 154 रन बनाए। टॉस की शैली बदलने से मैके को मदद नहीं मिली और वह लक्ष्य का पीछा करते हुए केवल नौ रनों का योगदान दे सकीं। इसके बाद वेलिंगटन के कप्तान ने पांच विकेट झटके और प्रतिद्वंद्वियों के बल्लेबाजी क्रम को नष्ट कर दिया, जिससे सामने वाली टीम 109 रन बनाकर ऑलआउट हो गई।

राम मंदिर पर साउथ अफ्रीकी क्रिकेटर केशव ने दिया बयान, जानें क्या कहा

अब अयोध्या में बन रहे राम मंदिर की गूंज विदेशों तक भी सुनाई दे रही है। इसी कड़ी में भारतीय मूल के साउथ अफ्रीकी क्रिकेटर केशव महाराज ने भी राम मंदिर को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। दरअसल, केशव महाराज ने कहा है कि वह अयोध्या में बन रहे श्रीराम मंदिर में दर्शन करने निश्चित तौर पर जाना चाहेंगे। 22 जनवरी को अयोध्या में बन रहे भव्य और दिव्य राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसको लेकर लगभग पूरा देश उत्साह में है और रामभक्तों में जश्न का माहौल है। बता दें कि अब अयोध्या में बन रहे राम मंदिर की गूंज विदेशों तक भी सुनाई दे रही है।

इसी कड़ी में भारतीय मूल के साउथ अफ्रीकी क्रिकेटर केशव महाराज ने भी राम मंदिर को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। दरअसल, केशव महाराज ने कहा है कि वह अयोध्या में बन रहे श्रीराम मंदिर में दर्शन करने निश्चित तौर पर जाना चाहेंगे। केशव महाराज ने जताई अयोध्या जाने की इच्छा बता दें कि, एक मीडिया चौनल को दिए गए इंटरव्यू में केशव ने कहा कि मैं अयोध्या निश्चित तौर पर जाना चाहूंगा। वहां अगले हफ्ते प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम है। उस समय तो साउथ अफ्रीका का टी20 मैच चल रहा होगा। इसलिए प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर मैं वहां मौजूद नहीं रह पाउंगा, लेकिन मैं अयोध्या जाना चाहता हूं। केशव महाराज जब भी मैदान पर बल्लेबाजी करने आते हैं तो उनके आते ही राम सिया राम बचता है। जिसके पीछे का कारण उन्होंने हाल ही में बताया था। दरअसल, केशव ने बताया कि वह खुद इस गाने को बजाने को कहते हैं।

पूर्व क्रिकेटर सुरेश रैना का बयान, कहा- कोहली-रोहित की मौजूदगी से भारत को टी20 वर्ल्ड कप में मजबूती मिलेगी

सुरेश रैना ने विश्व कप को देखते हुए अनुभवी रोहित शर्मा और विराट कोहली को अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के लिए राष्ट्रीय टीम में शामिल करने को गुरुवार को समझदारी भरा फैसला करार दिया। रोहित और कोहली की 14 महीने बाद भारत की टी20 टीम में वापसी हुई है। पूर्व भारतीय आल राउंडर सुरेश रैना ने विश्व कप को देखते हुए अनुभवी रोहित शर्मा और विराट कोहली को अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के लिए राष्ट्रीय टीम में शामिल करने को गुरुवार को समझदारी भरा फैसला करार दिया। रोहित और कोहली की 14 महीने बाद भारत की टी20 टीम में वापसी हुई है। रैना ने कहा कि उनकी मौजूदगी से टीम को मजबूती मिलेगी।

ठंड में ज्यादा पानी पीना बिगाड़ सकता है सेहत, जानिए कितना और किस तरीके से पिएं पानी

जिन लोगों को हार्ट और पेट से जुड़ी गंभीर बीमारी है उन्हें ठंड में ज्यादा पानी पीने से बचना चाहिए. गर्मी के मुकाबले में ठंड में हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है. ठंड में ज्यादा पानी सेहत के लिए खतरनाक साबित हो सकता है. जानिए ठंड में हार्ट मरीज के लोगों को कब और कितना पानी पीना चाहिए. कोरोना महामारी के बाद से ही पूरी दुनिया में हार्ट अटैक और स्ट्रोक से मरने वाली लोगों की संख्या बढ़ी है. सर्दियों के मौसम में हार्ट की बीमारी वाले लोगों के लिए परेशानी बढ़ जाती है. गर्मी या बाकी मौसम के मुकाबले सर्दी में हार्ट अटैक का खतरा काफी गुना बढ़ जाता है.इसकी खास वजह यह है कि ठंड में हार्ट को ब्लड पंप करने के लिए ज्यादा जोड़ पड़ता है. सर्दियों में शरीर की नसें सिकुड़ने लगती है. ऐसे में शरीर को गर्म करने के लिए हार्ट को तेजी से पंप करना पड़ता है. जिसके कारण दिल के मरीजों की परेशानी काफी बढ़ जाती है. ठंड के दिनों में ज्यादा पानी पीना आपको

मुश्किल में डाल सकता है.ठंड में हार्ट के मरीज के लिए पानी ज्यादा पीना नुकसानदायक है

कोरोना महामारी के बाद से दुनिया भर के लोगों को तेजी से हार्ट अटैक पड़ रहा है. सर्दी के मौसम में हार्ट अटैक के मरीजों की संख्या बढ़ जाती है. ठंड के मौसम में इसके मामले कई गुना बढ़ जाते हैं. इसलिए थोड़ा पानी पीने से पहले सोचना समझना चाहिए.

सर्दियों में ज्यादा पानी पीना हार्ट के लिए है खतरनाक

सर्दियों में कुछ लोग सुबह खाली पेट उठते ही 3–4 ग्लास पानी पी लेते हैं. अगर हार्ट के मरीज ऐसा कुछ करते हैं तो उन्हें काफी ज्यादा नुकसान हो सकता है. ऐसे में ब्लड में शुगर लेवल भी कम हो सकता है. ऐसे में शरीर का ऑटोनॉमिक नर्वस सिस्टम इसे नॉर्मल करने का काम करता है. जब कोई व्यक्ति बहुत ज्यादा लिक्विड डाइट लेते हैं तो हार्ट को पंप करने में ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है.खाली पेट न पिएं पानी खासकर हार्ट के मरीजहार्ट के मरीज खाली पेट पानी न पिएं. इससे आपकी सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है. क्योंकि ठंडा पानी नसों को और सख्त बना देती है . जिससे दिल को शरीर में ब्लड सप्लाई करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है. ऐसे में हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है. खाली पेट पानी पीना है तो गुनगुना पानी पिएं. ठंडा पानी न पिएं वह हार्ट की नसों को सिकुड़ सकती है.

सर्दियों में इन चार तरीकों से करें अखरोट का सेवन, शरीर को मिलेंगे कई जबरदस्त फायदे

अखरोट सभी पोषक तत्वों से भरपूर होने के साथ सेहत के लिए भी लाभकारी है। ऐसे में सर्दियों में अखरोट का सेवन करना काफी अच्छा माना जाता है। बता दें कि सर्दियों में अखरोट का इन चार तरह से सेवन करना चाहिए। अखरोट सभी पोषक तत्वों से भरपूर होने के साथ सेहत के लिए भी लाभकारी है। क्योंकि अखरोट में कैलोरी, एनर्जी, प्रोटीन और कार्ब्स जैसे तत्व पाए जाते हैं। इसके अलावा इसमें विटामिन ई, बी6 और कैल्शियम भी मौजूद होता है। अखरोट के सेवन से मानसिक और हृदय स्वास्थ्य बेहतर होता

है। साथ ही इसको खाने से मेटाबॉलिज्म बूस्ट होता है। ऐसे में अगर आप रोजाना इसका सेवन करते हैं तो हड्डियां और पाचन तंत्र भी मजबूत होता है। इसलिए आप किसी भी मौसम में इसका सेवन कर सकते हैं। ऐसे में अगर आप भी सर्दियों में अखरोट का सेवन करते हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं आपको सर्दियों में कैसे अखरोट का सेवन करना चाहिए। दूध और अखरोट सर्दियों में अखरोट का सेवन काफी ज्यादा फायदेमंद माना जाता है। इसको आप दूध के साथ मिलाकर खा सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले एक गिलास दूध में अखरोट की गिरी डालें और फिर इसको पका लें। दूध में 2–3 मिनट तक अखरोट को पकाएं और इसके बाद आप इस दूध को लें। इस दूध के सेवन से आप स्वस्थ महसूस करेंगे। अखरोट वाले दूध को पीने से हड्डियां मजबूत होती है। साथ ही इससे इम्यूनिटी भी बूस्ट होती है। इसलिए आप रोजाना दूध और अखरोट का सेवन कर सकते हैं।भीगे हुए अखरोटइसके अलावा सर्दियों में भीगे हुए अखरोट खाना भी काफी फायदेमंद होता है। इसलिए आप सबसे 2–3 अखरोट की गिरी लेकर रातभर के लिए भिगो दें। फिर अगली सुबह गिरी से छिलका हटाकर इसका सेवन करें। इससे आपको स्वास्थ्य संबंधी कई लाभ मिलेंगे। इस तरह से अखरोट का सेवन करने से हृदय स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। इसलिए सर्दियों में रोजाना भीगे हुए अखरोट का सेवन करना चाहिए। इसस शरीर में गर्माहट भी बनी रहती है। खाएं अखरोट का हलवाजिस तरह से लोग सर्दियों में गाजर या सूजी का हलवा खाते हैं। ठीक उसी तरह से आप सर्दियों में अखरोट का हलवा बनाकर खा सकते हैं। अखरोट का हलवा बनाने के लिए इसकी गिरी को एकदम बारीक पीस लें।

हल्दी के फंक्शन पर स्मार्ट और सेलिब्रिटी लुक के लिए ट्राई करें ये हेयरस्टाइल, दिखेंगी बेहद खूबसूरत

हल्दी सेरेमनी के लिए ब्रेड हेयर स्टाइल काफी ज्यादा पसंद की जाती है। इसके कई स्टाइल देखने को मिलते हैं। ऐसे में अगर आपको भी हल्की सेरेमनी अडेंट करनी है, तो आप भी बेहद आसानी से ब्रेड हेयर स्टाइल्स बनाकर अपने लुक को स्टाइलिश बना सकती हैं। शादी से जुड़े हर फंक्शन बेहद खास होते हैं। ऐसे में हर कोई अपने लुक को खास बनाना चाहता है। शादी में हल्दी फंक्शन काफी ज्यादा अहम होता है। ऐसे में अपने लुक को स्टाइलिश दिखाने में हेयर स्टाइल का बेहद खास रोल होता है। बता दें कि हल्दी सेरेमनी के लिए ब्रेड हेयर स्टाइल काफी ज्यादा पसंद की जाती है। इसके कई स्टाइल देखने को मिलते हैं। ऐसे में अगर आपको भी हल्की सेरेमनी अडेंट करनी है, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ आसान से ब्रेड हेयर स्टाइल्स के बारे में बताने जा रहे हैं। साथ ही इन हेयर स्टाइल को बनाने का तरीका भी जानेंगे। वॉटरफॉल ब्रेड हेयर स्टाइल अगर आप भी हल्दी सेरेमनी में अलग

हनुमान के निर्देशक प्रशांत वर्मा बोले, ग्लोबल होने के लिए पहले लोकल होने की जरूरत है

निर्देशक प्रशांत वर्मा, जो अपनी आने वाली सुपरहीरो फिल्म हनुमान की रिलीज का इंतजार कर रहे हैं, ने कहा है कि किसी कहानी की वैश्विक अपील के लिए यह जरूरी है कि वह अपनी संस्कृति में निहित हो और वहां के लोगों के जीवन को पर्दे पर उतारे।

निर्देशक ने फिल्म के लिए आयोजित एक कार्यक्रम के मौके पर मीडिया से बात की, जिसमें तेलुगू सुपरस्टार राणा दग्गुबाती ने भी युवा फिल्म निर्माता और उनकी रचना का समर्थन किया। प्रशांत ने मीडिया से बात करते हुए कहा, ग्लोबल ऑडियंस पहले ही मार्वल और डीसी के सुपरहीरो देख चुकी हैं। ग्लोबल ऑडियंस के बीच एक नया सुपरहीरो लाने के लिए, आपको ग्लोबल होने के लिए लोकल होने की जरूरी है। निर्देशक ने आगे कहा, आरआरआर की सफलता इसका

सबसे बड़ा उदाहरण है। आरआरआर के निर्माताओं ने एक ऐसी कहानी बुनी जो संस्कृति में निहित थी। उन्होंने छोटी–छोटी चीजों, लैंग्वेज, कॉस्टयूम, लैंडस्केप आदि पर ध्यान दिया और रिजल्ट सबके सामने है। उन्होंने कहा, अपनी कहानियों को ग्लोबल ऑडियंस तक ले जाने के लिए आपको जड़ों से जुड़े होने की जरूरत है, उन्हें जेम्स बॉन्ड जैसी शैली की कहानी बताने से उन पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि उनके पास पहले से ही वो फिल्में हैं। हनुमान 12 जनवरी को कई भाषाओं में सिनेमाघरों में आने के लिए तैयार है।

अंकिता लोखंडे के सपोर्ट में बोलीं कंगना रनौत, उम्मीद है कि मेरी दोस्त जीतेगी, लेकिन अपनी शादी की कीमत पर नहीं

कंगना रनौत अपनी मणिकर्णिका , द चेन ऑफ झांसी की को–स्टार अंकिता लोखंडे, जो बिग बॉस 17 की कंटेस्टेंट हैं, के सपोर्ट में सामने आई हैं। उन्होंने कहा कि मीडिया झूठी कहानी

बनाकर उनके परिवार को तोडने की पूरी कोशिश कर रहा है।

कंगना ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर अंकिता की सास के इंटरव्यू का एक वीडियो शेयर किया, जहां वह इस बारे में बात करती नजर आ रही हैं कि उन्हें ट्रॉफी क्यों जीतनी चाहिए।

एक्ट्रेस ने लिखा, मीडिया उनके परिवार को तोडने की पूरी कोशिश कर रहा है। वो आपको यह नहीं दिखाएंगे कि कैसे अंकिता लोखंडे की सासू मां उन्हें सपोर्ट कर रही हैं। आखिर में वह जिस तरह हंसती हैं, हा हा हा... वो मुझे पसंद आया। कितनी क्यूट हैं आंटी। रियलिटी शोज आते और जाते हैं, लेकिन परिवार तो हमेशा के लिए होता है। मुझे उम्मीद है कि मेरी दोस्त अंकिता लोखंडे जीतेंगी, लेकिन अपनी शादी की कीमत पर नहीं। बिग बॉस 17 के घर में अंकिता और उनके पति को अक्सर झगड़ते और लड़ते देखा गया है। ये जोड़ी तलाक के बारे में भी बात करती नजर आई।

अक्षरा सिंह और संभावना सेठ सहित कई भोजपुरी अभिनेत्रियों के लीक हुए एमएमएस वीडियो ने विवादों को दिया जन्म

अक्षरा सिंह ने अपने वायरल एमएमएस वीडियो को लेकर खूब सुर्खियां बटोरी थीं एक सेलिब्रिटी होने के नाते यह उनका नकारात्मक पहलू हैं। मुख्य मुद्दा यह है कि लोग प्रसिद्धि का दुरुपयोग कर रहे हैं और गुप्त उद्देश्यों के लिए मशहूर हस्तियों वीडियो वायरल हो गया। अंजलि बहुत छोटी है और एमएमएस कांड होना परेशान करने वाला होगा।लॉक अप फेम से उनके एमएमएस स्कैंडल के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि जो बकवास चल रही थी वह काफी हो चुकी है।

उसने अपने प्रेमी से बात की जो अपने माता–पिता के साथ पुलिस में शिकायत दर्ज कराने गया।

तृषा कर मधु के इंटीमेट वीडियो तृषा कर मधु का बॉयफ्रेंड को किस करते हुए वीडियो वायरल हो गया था। अभिनेत्री ने अपने प्रशंसकों से इसे हटाने का अनुरोध किया। तृषा कर ने यह स्पष्ट नहीं किया कि वीडियो ऑनलाइन कैसे लीक हुआ। भोजपुरी एक्ट्रेस अनारा गुप्ता पर लगे आरोप रिपोर्ट्स के मुताबिक, अनारा गुप्ता पर 2004 में अश्लील वीडियो बनाने का आरोप लगा था। हालांकि, उसी साल उन्हें क्लीन चिट मिल गई थी। संभावना सेठ का राजा चौधरी के साथ वीडियो वायरल हुआ था 2004 में संभावना का एक टीवी शो में राज चौधरी को किस करते हुए एक वीडियो वायरल हुआ था। यह काफी निंदनीय था शिल्पी राज भोजपुरी गायिका शिल्पी राज का अंतरंग एमएमएस वीडियो ऑनलाइन लीक हो गया शिल्पी राज का एक आदमी के साथ अंतरंग स्थिति में वीडियो ऑनलाइन लीक हो गया था।

गायिका ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, यह सब उनकी छवि खराब करने के लिए किया गया है। प्रियंका चोपड़ा के एमएमएस वीडियो पर विवाद खड़ा हो गया है 2021 में कथित तौर पर प्रियंका का एक वीडियो वायरल हुआ था।

की गोपनीयता या निजी तस्वीरों और वीडियो का फायदा उठा रहे हैं। अक्षरा सिंह ने अपने वायरल एमएमएस वीडियो को लेकर खूब सुर्खियां बटोरी थीं एक सेलिब्रिटी होने के नाते यह उनका नकारात्मक पहलू हैं। मुख्य मुद्दा यह है कि लोग प्रसिद्धि का दुरुपयोग कर रहे हैं और गुप्त उद्देश्यों के लिए मशहूर हस्तियों की गोपनीयता या निजी तस्वीरों और वीडियो का फायदा उठा रहे हैं। सिर्फ बॉलीवुड या साउथ ही नहीं बल्कि भोजपुरी इंडस्ट्री में भी कई एमएमएस स्कैंडल हुए हैं। और अधिकतर और दुख की बात है कि केवल अभिनेत्रियों की। यहां उन अभिनेत्रियों पर नजर डाल रहे हैं जिन्होंने अपने एमएमएस वीडियो के लिए सुर्खियां बटोरीं। बिग बॉस फेम अक्षरा सिंह का एक शख्स के साथ कथित इंटीमेट वायरल हुआ था। अक्षरा सिंह अक्षरा सिंह ने भोजपुरी इंडस्ट्री में अपने एमएमएस स्कैंडल को संबोधित किया है एक्ट्रेस ने कहा कि उन्होंने वायरल हुआ वीडियो भी नहीं देखा और इसकी निंदा करते हुए कहा कि उन्हें इन घटिया हथकंडों की परवाह नहीं है। लॉक अप फेम अंजलि अरोड़ा एक आदमी के साथ आपत्तिजनक स्थिति में युवा अभिनेत्री का

अक्षय कुमार और टाइगर श्राफ ईद पर बड़े मियां छोटे मियां की रिलीज के लिए तैयार

एक्शन हीरो अक्षय कुमार और टाइगर श्रॉफ अपनी अपकमिंग फिल्म बड़े मियां छोटे मियां की रिलीज के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्होंने ईद तक उल्टी गिनती शुरू कर दी है। अक्षय और टाइगर ने अपने–अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक नई तस्वीर साझा की, जिसमें दोनों आर्मी ग्रीन टी–शर्ट के साथ कैमोफ्लाज पैंट पहने हुए एक हेलिकॉप्टर के सामने पोज देते हुए दिखे। कैप्शन के लिए उन्होंने लिखारू बड़े और छोटे से मिलने का समय हो गया है और कम... बस 3 महीने।बड़े मियां छोटे मियां पूजा एंटरटेनमेंट और एएजेड फिल्म्स द्वारा निर्मित और ब्लॉकबस्टर निर्देशक अली अब्बास जफर द्वारा

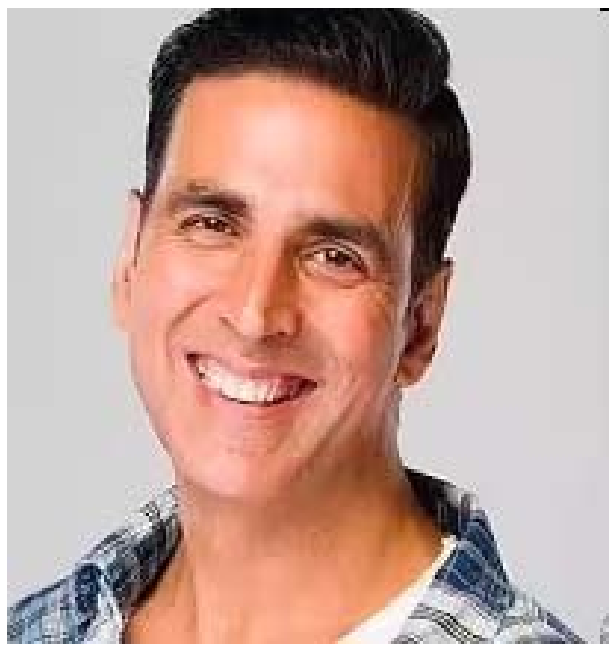

निर्देशित है। फिल्म, जिसमें पृथ्वीराज सुकुमारन भी हैं, अपने विपरीत व्यक्तित्व और मनमौजी तरीकों वाले दो व्यक्तियों के बारे में है, बड़े मियां और छोटे मियां को अपने मतभेदों को दूर करने और अपराधियों को सजा दिलाने के लिए एक साथ काम करना होगा।

रिषभ शेट्टी की कांतारा चौप्टर 1 पंजुरली दैवा, गुलिगा दैवा देवताओं का बताएगी इतिहास

एक्टर–फिल्म निर्माता ऋषभ शेट्टी स्टारर कांतारा रू चौप्टर 1 पंजुरली दैवा, गुलिगा दैवा देवताओं के इतिहास का वर्णन करेगा। अनाउंसमेंट वीडियो जारी

कृति ने महेश बाबू के साथ तस्वीर साझा की, तेलुगु डेब्यू 1 नेनोडीने के 10 साल पूरे होने का मनाया जश्न

एक्ट्रेस कृति सेनन, जिन्हें अब से पहले गणपत रू ए हीरो इज बॉर्न में देखा गया था, ने साउथ इंडियन फिल्म इंडस्ट्री में एक दशक पूरा कर लिया है। उनकी फिल्म 1 रू नेनोक्कडीने ने बुधवार को अपनी रिलीज के 10 साल पूरे कर लिए।1 रू नेनोक्कडीने में कृति ने तेलुगु सुपरस्टार महेश बाबू के साथ एक्टिंग की थी।एक्ट्रेस हाल ही में महेश बाबू से मिलीं, जिससे उनके पिछली पुरानी यादें ताजा हो गईं। उनकी ऑन–स्क्रीन केमिस्ट्री ने फैंस पर अमिट छाप छोड़ी, और रियूनियन ने दोनों अभिनेताओं और उनके फैंस के बीच इमोशन्स को जगाया है। मिटिंग में कृति के 10 साल पूरे होने का जश्न मनाया गया।एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम के स्टोरीज सेक्शन पर अपनी मुलाकात की तस्वीर साझा की। उन्होंने तस्वीर पर लिखा, मेरी पहली फिल्म को 10 साल हो गए हैं। मेरे पहले को–स्टार महेश बाबू के साथ मेरी पहली तेलुगु फिल्म!! मेरे दिल में इतनी सारी यादें और इतना आभार! कई सालों के बाद आपसे दोबारा मिलना कितना प्यारा और शानदार अनुभव है! बहुत कुछ बदल गया है, लेकिन, यह अभी भी वैसा ही है।उन्होंने महेश और उनकी पत्नी के साथ एक और तस्वीर अपलोड की और लिखारू 1 रू नेनोक्कडीने के 10 साल पूरे होने पर मुबारक! विश्वास नहीं हो रहा कि एक दशक हो गया!!वर्कफ्रंट की बात करें तो कृति के पास शाहिद

कपूर के साथ एक अनटाइटल फिल्म है, जिसकी घोषणा वह बुध वार को करेंगी। उनके पास पाइपलाइन में द क्रू भी है, जिसमें वह करीना कपूर और तब्बू के साथ नजर आएंगी और उनके प्रोडक्शन हाउस की पहली फिल्म दो पत्ती भी है।

टाइग 3 की सफलता के बाद इमरान हासमी ने 12 करोड़ से अधिक की रोल्स-रायस घोस्ट खरीदी

इमरान हाशमी, जिन्होंने हाल ही में टाइगर 3 में एक खलनायक के रूप में अपने प्रदर्शन से दर्शकों को प्रभावित किया, ने खुद को एक शानदार रोल्स–रॉयस घोस्ट कार उपहार में दी है। अभिनेता को गुरुवार को पापराजी ने 12 करोड़ रुपये से अधिक की अपनी ब्रांड–नई कार में सवारी का आनंद लेते हुए देखा। इमरान हाशमी, जिन्होंने हाल ही में टाइगर 3 में एक खलनायक के रूप में अपने प्रदर्शन से दर्शकों को प्रभावित किया, ने खुद को एक शानदार रोल्स–रॉयस घोस्ट कार उपहार में दी है। अभिनेता को गुरुवार को पापराजी ने 12 करोड़ रुपये से अधिक की अपनी ब्रांड–नई कार में सवारी का आनंद लेते हुए देखा। पपराजी द्वारा अभिनेता के कई वीडियो और तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा की गई हैं, जिन्होंने नेटिजन्स का ध्यान आकर्षित किया है। वीडियो में इमरान काले रंग की रोल्स–रॉयस की सवारी का आनंद लेते नजर आ रहे हैं। हाल ही में शकिंग खानश शाहरुख खान ने भी अपनी कमबैक फिल्म श्पठानश की सफलता के बाद रोल्स–रॉयस कलिनन खरीदी। इस बीच, इमरान हाल ही में

जैस्मीन भसीन ने वार्निंग 2 के लिए पहली बार पंजाबी में किया डब

एक्ट्रेस जैस्मिन भसीन वॉर्निंग 2 के लिए तैयारी कर रही हैं और उन्होंने पहली बार खुद पंजाबी में डब किया है। इस बारे में बात करते हुए जैस्मीन ने कहा, इससे पहले हनीमून में किसी और ने मेरे लिए डब किया था, इस बार मैं यह करना चाहती थी। सौभाग्य से, मैंने पूरी फिल्म में डब किया है। मैं पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री में और

अधिक प्रस्तावों की तलाश में हूं, इसलिए मैं अपनी बोली जाने वाली पंजाबी स्किल पर भी काम कर रही हूं। लेकिन, वार्निंग 2 के लिए डबिंग का यह एक्सपीरियंस बहुत अच्छा था। ऐसा कहा जा रहा है कि फिल्म में जैस्मीन एक दिलचस्प अवतार में नजर आएंगी, लेकिन, उनकी भूमिका के बारे में अधिक जानकारी गुप्त रखी गई है। वॉर्निंग 2 दो फरवरी को रिलीज होने वाली है।

कानूनी मुसीबत में फंसने के बाद नयनतारा की अन्नपूर्णानी को नेटफ्लिक्स से हटा दिया गया

हिंदू समूहों के आरोपों के बीच नेटफ्लिक्स ने नयनतारा की अन्नपूर्णानी को अपने मंच से हटा दिया है कि यह एक षहिंदू विरोधीष फिल्म है। फिल्म के खिलाफ धार्मिक भावनाएं आहत करने का मामला दर्ज किया गया है। हिंदू समूहों के आरोपों के बीच नेटफ्लिक्स ने नयनतारा की अन्नपूर्णानी को अपने मंच से हटा दिया है कि यह एक षहिंदू विरोधीष फिल्म है। फिल्म के खिलाफ धार्मिक भावनाएं आहत करने का मामला दर्ज किया गया है। फिल्म 1 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई और 29 दिसंबर से नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीमिंग शुरू हुई। ओटीटी पर उपलब्ध होने के एक हफ्ते बाद, इसे आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। हिंदू आईटी सेल के संस्थापक रमेश सोलंकी ने अपनी शिकायत में दावा किया कि फिल्म शहिंदू धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचा रही है।श अभिनेता नयनतारा, जय, लेखक–निर्देशक नीलेश कृष्णा, निर्माता जतिन सेठी, आर रवींद्रन और पुनित गोयनका, जी स्टूडियो के मुख्य व्यवसाय

अधिकारी शारिक पटेल और नेटफ्लिक्स इंडिया की प्रमुख मोनिका शेरगिल के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई थी। हिंदू आईटी सेल के संस्थापक रमेश सोलंकी ने अपनी शिकायत में दावा किया कि फिल्म शहिंदू धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचा रही है।श अभिनेता नयनतारा, जय, लेखक–निर्देशक नीलेश कृष्णा, निर्माता जतिन सेठी, आर रवींद्रन और पुनित गोयनका, जी स्टूडियो के मुख्य व्यवसाय अधिकारी शारिक पटेल और नेटफ्लिक्स इंडिया की प्रमुख मोनिका शेरगिल के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई थी।नेटफ्लिक्स ने नयनतारा की अन्नपूर्णानी को हटाया अन्नपूर्णी को आलोचकों और दर्शकों से समान रूप से नकारात्मक समीक्षा मिली। फिल्म का निर्देशन नवोदित फिल्म निर्माता नीलेश कृष्णा ने किया है। रमेश सोलंकी के अलावा विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के प्रवक्ता श्रीराज नायर ने भी नेटफ्लिक्स को फिल्म हटाने की चेतावनी दी थी। उन्होंने फिल्म से एक क्लिपिंग साझा करने के लिए एक्स को लिया और लिखा, ष्हम आपको /नेटफ्लिक्सइंडिया को सख्त चेतावनी दे रहे हैं कि आप अपनी इस दुष्ट फिल्म को तुरंत वापस ले लें अन्यथा कानूनी परिणाम और /बजरंगडालऑर्ग शैली की कार्रवाई का सामना करने के लिए तैयार रहें। कानूनी लड़ाई के बाद नेटफ्लिक्स ने नयनतारा की श्अन्नपूर्णीश को ओटीटी प्लेटफॉर्म से हटा दिया है। फिल्म के निर्माताओं में से एक जी स्टूडियोज ने विश्व हिंदू परिषद को पत्र लिखकर कहा है कि फिल्म को संपादित होने तक मंच से हटा दिया जाएगा। निर्देशक नीलेश कृष्णा से उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए संपर्क किया। लेकिन, फिल्म निर्माता ने टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। अन्नपूर्णानी पर शिकायत दर्ज अन्नपूर्णानी श्रीरंगम के रूढ़िवादी शहर में रहने वाले एक ब्राह्मण परिवार की एक महत्वाकांक्षी महिला के बारे में है। वह अपने जुनून और बचपन से सिखाए गए रूढ़िवादी आदर्शों के बीच फंसी हुई है। फिल्म में वह अपनी जाति और धार्मिक मतभेदों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देती। रमेश सोलंकी द्वारा दर्ज की गई शिकायत में उल्लेख किया गया है कि फिल्म श्लव जिहादश को बढ़ावा दे रही है। हालाँकि, नयनतारा की अन्नपूर्णानी और जय के फरहान के बीच दोस्ताना रिश्ता है। फिल्म में उनके रोमांटिक रिश्ते का पता नहीं लगाया गया है। अन्नपूर्णीश के एक अन्य दृश्य में फरहान नायिका को यह समझाकर मांस खाने के लिए मनाते हैं कि भगवान राम ने भी मांस खाया है। चरमोत्कर्ष में, अन्नपूर्णानी हिजाब पहनती है और खाना पकाने की प्रतियोगिता के अंतिम दौर में बिरयानी बनाने से पहले नमाज अदा करती है।

मेट्रो...इन डिनो को मिली नई रिलीज डेट,

फिल्म निर्माता अनुराग बसु की आगामी निर्देशित फिल्म मेट्रो. ..इन डिनो एक बार फिर से चर्चा में हैं। फिल्म पहले 29 मार्च को बड़े पर्दे पर रिलीज होने वाली थी लेकिन अब फिल्म की रिलीज डेट को आगे बढ़ा दिया है। अब यह 30 सितंबर को रिलीज होगी। फिल्म निर्माता अनुराग बसु की आगामी निर्देशित फिल्म मेट्रो...इन डिनो एक बार फिर से चर्चा में हैं। फिल्म पहले 29 मार्च को बड़े पर्दे पर रिलीज होने वाली थी लेकिन अब फिल्म की रिलीज डेट को आगे बढ़ा दिया है। अब यह 30 सितंबर को रिलीज होगी। आगामी फिल्म में आदित्य रॉय कपूर, सारा अली खान, अनुपम खेर, नीना गुप्ता, पंकज त्रिपाठी, कोंकणा सेनशर्मा, अली फजल और फातिमा सना शेख जैसे कलाकार शामिल हैं।

यह फिल्म बसु की 2007 की फिल्म लाइफ इन ए मेट्रो (2007) का सीक्वल है, जो मूल रूप से 8 दिसंबर, 2023 को स्क्रीन पर रिलीज होने वाली थी। ट्रेड एनालिस्ट और फिल्म समीक्षक तरण आदर्श ने भी अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर यह खबर साझा की। कैप्शन में तरण ने लिखा, अनुराग बसु की एंथोलॉजी श्मेट्रो... इन डिनोश (डमजतव प्द क्पदव) की नई रिलीज डेट अनुराग बसु द्वारा निर्देशित एंथोलॉजी – को नई रिलीज डेट मिली– 13 सितंबर 2024।श्र निर्माताओं ने घोषणा की कि रिलीज को 29 मार्च, 2024 तक बढ़ा दिया गया है। भूषण कुमार और अनुराग बसु की फिल्म ने हाल ही में अपनी नई रिलीज डेट की घोषणा की है।

भगवान राम के रूप में पूजे जाते थे अरुण गोविल,

रामानंद सागर की रामायण में भगवान राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल को आज भी लोग भगवान राम के रुप में देखते हैं। आपको बता दें कि श्रीराम के किरदार से घर–घर में फेमस हुए अरुण गोविल आज यानी की 12 जनवरी को अपना 66वां जन्मदिन मना रहे हैं।रामानंद सागर की रामायण में भगवान राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल को आज भी लोग भगवान राम के रुप में देखते हैं। आपको बता दें कि श्रीराम के किरदार से घर–घर में फेमस हुए अरुण गोविल आज यानी की 12 जनवरी को अपना 66वां जन्मदिन मना रहे हैं। बता दें कि 80 के दशक में रामायण टीवी पर प्रसारित होती थी। वहीं अपने रोल के कारण अभिनेता अरुण गोविल सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहे। जब बहुत कम लोगों के पास टीवी होता था। उस दौर से लोग अरुण गोविल के फैन रहे हैं। तो वहीं कुछ लोग उनको सच में भगवान राम मानकर उनके श्रीराम वाले पोस्टर की पूजा करते थे।

कांग्रेस सनातन विरोधी–कन्हैया लाल जायसवाल

ब्यूरो

देवरिया (उ0प्र0) देवरिया जिले मे भाजपा सलेमपुर के पूर्व मण्डल अध्यक्ष एवम स्टेशन सलाहकार समिति के सदस्य कन्हैया लाल जायसवाल ने एक प्रेस विज्ञप्ति से कहा कि देश भर में एक ओर अयोध्या राम मंदिर उद्घाटन समारोह को लेकर उल्लास का माहौल है। वही कांग्रेस द्वारा राम मंदिर में राम लला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के आमंत्रण को ठुकरा दिया गया है।इस मुद्दे पर कन्हैया लाल जायसवाल ने कहा कि ऐसे लोगों को आमंत्रण ही नहीं देना चाहिए था। कांग्रेस सनातन विरोधी है। भेजे गए निमन्त्रण को अस्वीकार करने से साफ जाहिर होता है कि कांग्रेस पार्टी भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म के प्रति विरोधी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति अपनी ''ईर्ष्या, द्वेष और हीन भावना'' के कारण कांग्रेस देश का विरोध करने की हद तक चली गई है और अब भगवान का विरोध कर रही है।उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर भारतीय परंपराओं और संस्कृति के उच्चतम मूल्यों का प्रतीक है लेकिन कांग्रेस और समान मानसिकता वाले अन्य विपक्षी दलों के लिए कट्टरपंथी राजनीति अधिक महत्वपूर्ण है।

14 जनवरी से 22 जनवरी तक मनाया जाएगा रामोत्सव

राम कथा, अखंड रामायण, भजन/कीर्तन आदि सहित विविध कार्यक्रम होंगे आयोजित

डीएम ने कार्यक्रम की सफलता हेतु नामित किए अधिकारी

ब्यूरो

देवरिया(उ0प्र0) देवरिया जिले मे जिलाधिकारी अखण्ड प्रताप सिंह ने बताया है कि 14 से 22 जनवरी तक जनपद के प्रमुख मंदिरों, हनुमान मंदिरो, वाल्मीकि मंदिरों में रामकथा, रामायण–पाठ, भजन–कीर्तन आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर मंदिरों में दीप प्रज्वलन, दीप दान के साथ–साथ रामकथा प्रवचन, अनवरत रामायण, रामचरित मानस का पाठ, सुन्दरकाण्ड, नगर संकीर्तन, कलश यात्रा आदि कार्यक्रम नगर निकायों, नगर पालिका, समस्त विकास खंड क्षेत्रान्तर्गत अवस्थित मंदिरों में आयोजित किये जायेंगे। जिलाधिकारी ने बताया है कि रामोत्सव का उद्देश्य रामायण में उल्लिखित भगवान श्रीराम जी के आदर्शों, मानव मूल्यों, सामाजिक मूल्यों से आम जन मानस को इस अभियान से जोड़ा जाना है। इस अवसर

पर मंदिरों में दीप प्रज्ज्वलनध दीप दान के साथ–साथ रामकथा प्रवचन, अनवरत रामायण ध रामचरित मानस का पाठध्सुन्दरकाण्ड आदि के कार्यकम भी आयोजित किये जाने हेतु नोडल अधिकारी अधिकारी एवं सहायक नोडल अधिकारी नामित किये गए हैं। नगर निकायों ध नगर पालिका में अवस्थित उक्त प्रमुख मंदिरों के लिए संबंधित एसडीएम को नोडल अधिकारी तथा संबंधित तहसीलदार एवं अधिशासी अधिकारी को सहायक नोडल अधिकारी नामित किया गया है। इसी प्रकार विकास खण्डों हेतु संबंधित बीडीओ को नोडल एवं एडीओ पंचायत को सहायक नोडल नामित किया गया है। नामित अधिकारी कार्यक्रम का आयोजन 14 से 22 जनवरी तक सुनिश्चित करायेंगे एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं, सांस्कृतिक दलो का चयन कर कार्यक्रम को भव्यता के साथ मूर्त रुप देंगे। उक्त कार्यक्रम के आयोजन के लिए जनपद स्तर पर अपर जिला मजिस्ट्रेट (प्रशासन), देवरिया को नोडल अधिकारी नामित किया गया है। इस अवसर पर नगर निकायों एवं विकास खण्डों में संकीर्तनों का आयोजन किया जायेगा, जिसमें स्थानीय भजन ध कीर्तन मण्डलियों को सम्मिलित करते हुए नगरों एवं विकास खण्डों में राम मंदिर रथ एवं कलश यात्राओं का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने बताया कि इस कार्य हेतु महिला मंगल दल, युवा मंगल दल, आशा बहुएँ, ए०एन०एम०, आँगनवाड़ी कार्यकत्री, ग्राम पंचायत सहायक आदि का सहयोग लिया जाएगा।

थाना बनकटा पुलिस द्वारा चोरी के वाहन से 26 पेटी अग्रेंजी शराब के साथ 01 अभियुक्त गिरफ्तार

ब्यूरो

देवरिया (उ0प्र0) देवरिया जिले मे थाना बनकटा पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर ग्राम एकडंगा कुम्भाचक रोड के पास से एक चोरी के महिन्द्रा स्कार्पियों वाहन न0 BR04PA8886 के साथ कुल 26 पेटी अग्रेंजी शराब बरामद करते हुए 01 अभियुक्त 1. बृजकिशोर शाह पुत्र स्व0 गुरु शाह निवासी ग्राम उसरी बुजुर्ग थाना एम0एच0 नगर जनपद सिवान, बिहार को गिरफ्तार किया गया। पुलिस टीम द्वारा गिरफ्तार अभियुक्त से पूछताछ करने पर बताया गया कि उपरोक्त वाहन को मेरे द्वारा 02 माह पूर्व जनपद बेगूसराय, बिहार से चुराया गया था और गाड़ी का नम्बर प्लेट बदलकर

शराब तस्करी कर रहे थे जिसकी जांच पुलिस टीम द्वारा किये जाने पर पाया गया कि वाहन उपरोक्त के सम्बन्ध में थाना नगर जनपद बेगूसराय, बिहार में मु0अ0सं0716/2023 धारा 379 भादवि का अभियोग पंजीकृत है। गिरफ्तार अभियुक्त, बरामद शराब व चोरी के वाहन को कब्जे में लेते हुए स्थानीय पुलिस द्वारा अभियोग पंजीकृत कर नियमानुसार कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्त का विवरणः बृजकिशोर शाह पुत्र स्व0 गुरु शाह निवासी ग्राम उसरी बुजुर्ग थाना एम0एच0 नगर जनपद सिवान, बिहार बरामदगी का विवरणः 1. एक अदद चोरी की महिन्द्रा स्कार्पियों वाहन न0 उत04PA8886 2. कुल 26 पेटी ऑफिसर चॉइस प्रत्येक पाउच 180 ML गिरफ्तार करने वाली टीम का विवरणः1. उ0नि0 श्री रिजवान अली थाना बनकटा जनपद देवरिया ।2. का० योगेन्द्र यादव थाना बनकटा जनपद देवरिया ।3. का0 सुनील सिंह थाना बनकटा जनपद देवरिया । 4. का0 जितेन्द्र यादव थाना बनकटा जनपद देवरिया ।

जिला पूर्ति अधिकारी ने आपूर्ति विभाग के कार्य एवं संचालित योजनाओं का दिया संक्षिप्त विवरण

ब्यूरो

देवरिया (उ0प्र0) देवरिया जिले मे जिला पूर्ति अधिकारी ने बताया है कि जनपद–देवरिया में वर्तमान में अन्त्योदय अन्न योजना कार्डधारको को प्रति कार्ड 35 किग्रा० खाद्यान्न (14 किग्रा0 गेहूँ व 21 किग्रा० चावल निःशुल्क) तथा पात्र गृहस्थी योजना, के कार्डधारको को प्रति यूनिट 05 किग्रा० खाद्यान्न (02 किग्रा० गेहूँ तथा 03 किग्रा० चावल निःशुल्क) वितरण कराया जा रहा है। जनपद देवरिया में चीनी का वितरण अन्त्योदय योजना के कार्डधारकों में 01 किग्रा० प्रतिमाह के अनुसार (त्रैमास में एक बार 03 किग्रा0 रूपया 18ध्– प्रतिकिग्रा० की दर से वितरण कराया जा रहा है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम–2013 के अन्तर्गत अन्त्योदय योजना के राशन कार्ड तथा पात्र गृहस्थी योजना के राशन कार्ड दो प्रकार के राशन कार्ड प्रचलित है। उक्त दोनो प्रकार के अन्तर्गत कुल 559419 परिवारों को राशन कार्ड जारी है, जिसमें कुल 2402275 व्यक्ति (यूनिट) सम्मिलित है। वर्तमान में समस्त राशन कार्डो अर्थात अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी योजना के अन्तर्गत सम्मिलित समस्त कार्डधारको को निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है।जनपद में वर्तमान में 78 गैस एजेन्सी तथा 172 पेट्रोल पम्प संचालित है। जनपद देवरिया में उज्जवला योजना के अन्तर्गत कुल 1,95,622 निःशुल्क गैस कनेक्शन निर्गत है। जिन्हे शासन के निर्देशानुसार माह नवम्बर, 2023 से माह मार्च, 2024 के मध्य दो गैस सिलेण्डर निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। जनपद–देवरिया में उज्जवला योजना के लाभार्थियो को सरकार द्वारा निःशुल्क गैस कनेक्शन उपलब्ध कराने के कारण संबंधित लाभार्थी धूम्रमुक्त वातावरण में भोजन पकाने का कार्य कर रहे है, जिससे धूम्र जनित बीमारियों से मुक्ति मिल रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान जनपद में 75 मॉडल अन्नपूर्णा भवन का निर्माण कार्य कराया जा रहा है, जहाँ से कार्डधारकों को आवश्यक वस्तुए सुविधाजनक ढंग से प्राप्त होने के साथ–साथ सी०एस०सी० संबंधी सुविधा भी प्राप्त हो सके। उचित दर दुकानों पर लगाये जाने वाले इलेक्ट्रानिक बेईंग मशीन सहित कॉटा एवं ई–पास मशीन लगाने का कार्य चल रहा है। जिससे राशन कार्डधारको को सही मात्रा व तौल में खाद्यान्न प्राप्त हो सकें।

बाल संरक्षण के प्रति संवेदनशील है सरकार ई. अशोक कुमार यादव

'उत्तर प्रदेश राज्य बाल संरक्षण आयोग के सदस्य ने राष्ट्रीय युवा दिवस पर छात्रों को नशा मुक्ति का दिलाया शपथ

संवाददाता।

मीरजापुर । उत्तर प्रदेश राज्य बाल संरक्षण आयोग के सदस्य इंजीनियर अशोक कुमार यादव ने कहा है कि बाल संरक्षण के प्रति सरकार पूरी तरह से गंभीर है। इसके लिए कड़े कानून के साथ–साथ निरंतर अभियान चलाकर बाल संरक्षण की दिशा में विविध कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं, ताकि बाल संरक्षण को रोका जा सके। वह शुक्रवार को फतहां स्थित चौधरी चरण सिंह अतिथि गृह में पत्रकारों से मुखातिब हो रहे थे। उन्होंने कहा कि विद्यालयों के आसपास किसी भी प्रकार के नशे इत्यादि की दुकान ना हो इसके लिए 100 मीटर की दूरी निर्धारित करने के साथ–साथ सख्त निर्देश भी दिए गए हैं। मेडिकल की दुकानों पर भी जो विद्यालयों के आसपास हैं नशे की सिरप इत्यादि नो हो इसके लिए कैमरे लगाए जाने के साथ ही साथ निर्देशित किया गया है कि बच्चों का विशेष ख्याल रखा जाए, ताकि वह नशे के चंगुल में ना फंसने पाएं। उन्होंने बताया कि बाल संरक्षण अभियान के तहत स्वामी विवेकानंद की जयंती अवसर 12 जनवरी से 23 जनवरी 2024 तक एक विशेष अभियान ष्हर विद्यालयों में एक युद्ध नशे के विरुद्धष चलाया जा रहा है। इसी के तहत नगर के राजस्थान इंटर कॉलेज में स्वामी विवेकानंद जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस अवसर पर छात्रों के बीच नशा मुक्ति पर चर्चा करते हुए उन्हें शपथ दिलाया गया। राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य द्वारा बताया गया कि बाल किशोरों के संरक्षण के लिए सरकार ने कई कदम उठा रखे हैं तथा इनके संरक्षण के प्रति सरकार गंभीर और संवेदनशील भी है। पत्रकारों से मुक्ती होने से पूर्व उत्तर प्रदेश राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य इंजीनियर अशोक कुमार यादव ने जिला मंडलीय अस्पताल के महिला एवं चिल्ड्रन वार्ड का निरीक्षण किया है। जहां उन्होंने अस्पताल में सफाई व्यवस्था पर असंतोष जताते हुए सफाई व्यवस्था की मुकम्मल व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने की निर्देश दिए। अस्पताल के वार्ड में मक्खियों और मच्छरों को देख उन्होंने सफाई के साथ–साथ दवा के छिड़काव की भी बात कही। तत्पश्चात उन्होंने बाल संरक्षण गृह का निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओं पर संतोष जताया है। इस मौके पर उनके साथ जिला प्रोबेशन अधिकारी शक्ति त्रिपाठी, जिला संरक्षण अधिकारी जिला बाल संरक्षण ईकाई पंकज शर्मा, महिला कल्याण अधिकारी श्रीमती डा मंजू यादव मौजूद रही हैं। मंडलीय अस्पताल का किया निरीक्षण राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य इंजीनियर अशोक कुमार यादव ने मंडलीय चिकित्सालय का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सर्वप्रथम पीडियाट्रिक वार्ड गये वहां भर्ती मरीजो से कुशल क्षेम जाना एवं चिकित्सालय में दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में जाना। उसके बाद जेरिएट्रिक वार्ड, ट्रामा सेंटर का भी निरीक्षण किया। इस दौरान चिकित्सालय के प्रमुख अधीक्षक डॉ तरुण सिंह, चिकित्सालय प्रबंधक अनुज ठाकुर, एसीएमओ डॉ मुकेश प्रसाद, डॉ देवराज यादव, डॉ प्रतीक पाठक, ज्ञानमति राय व चिकित्सालय के कर्मचारी उपस्थित थे।

अच्छे नागरिक बनने के लिए अच्छे आर्दशों एवं अच्छे सुविचारों को अपनाना चाहिए–अपर जनपद न्यायाधीश

'विचाराधीन प्रवासित 50 किशोरो के हित्तार्थ विधिक जागरूकता शिविर आयोजित

संवाददाता

मीरजापुर । उप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ एवं राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली के प्लान आफ एक्सन के तहत जनपद न्यायाधीश अनमोल पाल के निर्देशन पर राष्ट्रीय युवा दिवस एवं विवेकानन्द जयन्ती के अवसर पर जिला सम्प्रेक्षण गृह किशोर, मोर्चाघर में विचाराधीन प्रवासित 50 किशोरो के हितार्थ विधिक जागरूकता शिविर कार्यक्रम का शुभारम्भ अपर जनपद न्यायाधीश, सचिव डीएलएसए लाल बाबू यादव ने स्वामी विवेकानन्द जी को माल्यापर्ण कर कार्यकम का शुभारम्भ किये। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव, अपर जनपद न्यायाधीश लाल बाबू यादव ने उपस्थित अधिकारीगण एवं प्रवासित किशोरो को सम्बोधित करते हुए बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस और स्वामी विवेका नन्द जयन्ती को हम सब को एक साथ मनाये जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिसे हम सब युवा दिवस के साथ साथ महान व्यक्तित्व वाले स्वामी विवेका नन्द जी के जन्मदिवस को हर्षोउल्लास से मनाया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द जी के आर्दशों एवं अच्छे सुविचारों को अपने अन्दर आत्मसात करने की आवश्यकता है। किशोरो को सम्बोधित करते हुए बताया कि विवेका नन्द जी ने अपने पुस्तक में लिखा है कि अच्छे नागरिक बनने के लिए अच्छे आर्दशों एवं अच्छे सुविचारों को अपनाना चाहिए तभी लक्ष्य की प्राप्ति होगी। उनके विचारों को आत्मसात करने और चिन्तन करने की आवश्यकता है। यदि किसी भी लक्ष्य को पाना चाहते है तो उसके लिए अपने अन्दर जुनून जागृत करना होगा। अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए बुराईयों को छोड़ना होगा और अच्छाईयों को अपनाना होगा तभी आप एक अच्छे नागरिक बन सकते है और अपने व्यक्तित्व को निखार पायेगें। जिला प्रोबेशन अधिकारी श्रीमती शक्ति त्रिपाठी ने उपस्थितजनो एवं प्रवासित किशोरो को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सरल शब्दो में बताया कि विवेका नन्द जी के आर्दशों एवं सुविचारों को प्रत्येक किशोरो को अपने व्यक्तित्व में लाना चाहिए तभी वह आर्दश नागरिक बन सकता है। सीडब्ल्यूसी अध्यक्ष रामरक्षा पाण्डेय, सदस्य मनीष त्रिपाठी, सुश्री रेनू पाण्डेय अधीक्षक, रमाकान्त मिश्र, महिला कल्याण अधिकारी श्रीमती डा मंजू यादव, अधिक्षिका वनस्टाप सेन्टर श्रीमती पूजा मौर्या ने युवा दिवस व स्वामी विवेका नन्द जयन्ती के विषय पर उपस्थितजनों एवं प्रवासित किशोरों को विस्तार पूर्वक जानकारी दिए और सम्प्रेक्षण गृह में प्रवासित किशोरों द्वारा मनलुभावन, नाटक, नृत्य इत्यादि रंगारंग कार्यकम किया गया। विधिक जागरूकता शिविर में डीएलएसए वरिष्ठ सहायक दीपक कुमार श्रीवास्तव, पीएलवी जय प्रकाश, कृष्णकुमार एवं जिला प्रोबेशन कार्यालय स्टाफ, सीडब्लूसी कार्यालय एवं सम्प्रेक्षण गृह के समस्त स्टाफ उपस्थित होकर सहयोग प्रदान किए।

ट्रक में पीछे से घुसी बोलेरो, चार घायल, दो रेफर

संवाददाता।

राजगढ़, मीरजापुर । राजगढ़ थाना क्षेत्र के ददरा पहाड़ी गांव के पास मिर्जापुर सोनभद्र मार्ग पर ट्रक चालक द्वारा अचानक ब्रेक लगाने पर पीछे से आ रहे बोलेरो सवार ट्रक में टक्कर मार दिए। जिससे बोलेरो सवार चार लोग जख्मी हो गए। सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजगढ़ में भर्ती किया गया। जहां दो घायलों की हालत गंभीर देख जिला अस्पताल मिर्जापुर रेफर कर दिए। अन्य घायलों को इलाज के बाद घर भेज दिया गया। थाना क्षेत्र के ददरा पहाड़ी गांव में एक वृद्ध महिला की मौत हो गयी थी।जिसका चुनार घाट पर अंतिम संस्कार करने के बाद बोलेरो सवार अपने घर वापस जा रहे थे। जैसे ही ददरा पहाड़ी गांव के पास पहुंचे कि मिर्जापुर सोनभद्र मुख्यमार्ग पर जा रहा ट्रक चालक अचानक ट्रक का ब्रेक लगा दिया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजगढ़ में भर्ती किया गया। जहां हालत गंभीर देख बब्बू पटेल तथा डॉक्टर कोल को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।अन्य दो घायलों को हल्की छोटे आयी थी। जिनको इलाज के बाद घर भेज दिया गया।

धोखाधड़ी कर दोस्त ने अकाउंट से उड़ाए लाखों

सद्दाम हुसैन देवरिया

देवरिया (उ0प्र) देवरिया जिले के मईल थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम भागलपुर के एक युवक की जो महाराष्ट्र के कोल्हापुर में काम करते थे। उनके साथ रहने वाले ने धोखाधड़ी कर उनके अकाउंट से 90000 उड़ा दिए। जिससे काफी आहत होकर युवक ने मईल थाने में तहरीर दिया। मनोज साहनी महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले में काम करते थे, इन्हीं के अकाउंट में पैसे आते थे जो मजदूरों को यह बाटते थे। 8/11 को इनके मोबाइल में 1 कहीं से आता है। उसी सुबह यह अपने दोस्त को 10000 भेजते हैं, जब उसका पैसा नहीं पहुंचता है तो इनका दोस्त बोलता है कि पैसा अभी नहीं पहुंचा है। इन्होंने बोला कि मैं 12.00 बजे तक चेक करके बताता हूं। उसी के आधे घंटे बाद सोनू पांडेय आता है। एक नंबर लेकर के बोलता है कि इस नंबर पर बात करिए यह

मेरे संपर्क की है। जो बैंक में काम करते हैं। तो उस मोबाइल नंबर पर बात करने पर इनको कुछ बातें समझ नहीं आई, तो इन्होंने सोनू पांडेय को मोबाइल दे दिया कि आप बात करके देखो क्या कह रहा है। उसके बाद सोनू से वह आदमी ने कहा कि एनीडेस्क एप्स डाउनलोड कीजिए। उस पर एक कोड जाएगा उसको हमें बताइए उस कोड को सोनू पांडेय ने उसे बताया। सोनू पांडेय ने मुझसे कहा बैलेंस चेक करने के लिए तो उधर से हैंकर बोलता है ।

बाबा बूढ़ेनाथ शुभ्र धातु चांदी के आभामंडल से प्रदान करेंगे अमृत आशीर्वाद

'82 किलो चांदी से सुसज्जित हो रहा है गर्भगृह

'दो स्तंभ हुए सुसज्जित इनमें विविध रूपों की मिल रही झलक

मीरजापुर । नगर के पौराणिक महत्ता के बूढ़ेनाथ मन्दिर को शुभ्र धातु चांदी से सुसज्जित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। गर्भ गृह के चार स्तंभों में दो स्तंभों को अति आकर्षक ढंग से मढ़ दिया गया। स्तंभों को सुसज्जित करने की वास्तु शैली अत्यंत आकर्षक है। इन स्तंभों को प्रथम दृष्ट्या देखने से कभी प्रतीत होता है कि यह महादेव के पुत्र गणेश जी की दांत है तो कभी वाहन नन्दी के पीठ का ऊर्ध्व हिस्सा भी लगता है तो साथ में महादेव के गले में लिपटने वाले उनके गण सर्प की भी झलक मिलती है। इसी के साथ शीश पर स्थित चांदी जैसे चमकने वाले चन्द्रमा जैसी चमक तो है ही। बूढ़ेनाथ मन्दिर के विद्वान सन्त डॉ योगानन्द गिरि के अनुसार लगभग 82 किलो चांदी से मन्दिर के गर्भ गृह को सुसज्जित किया जाएगा। इसमें वर्तमान कीमत के अनुसार 84 लाख रुपए व्यय हो रहे हैं। चूंकि धातुओं में सर्वाधिक शुद्ध चांदी ही है। सोने में कलिकाल का निवास है। मान्यता है कि चांदी का सबसे बड़ा उत्स (खजाना) चन्द्रमा है। शरद–पूर्णिमा पर जब चन्द्रमा धरती के सर्वाधिक निकट होता है तब रजत–ज्योत्स्ना (चांदी की किरणों) के बीच खीर रखने की परंपरा है। चन्द्रमा औषधीश (औषधियों का राजा) होता है। सारी वनस्पतियों में पौष्टिकता चन्द्रमा से ही रात्रिकाल में समाहित होती है। महादेव प्रकृति के देवता है। इसलिए चन्द्रमा को महादेव सिर पर धारण करते है। कथा यह है कि अमृत बंटवारे में देवताओं के बीच राहु छिपा था। उसके पीछे चंद्रमा था। जब राहु ने अमृतपान कर लिया तथा चन्द्रमा ने इसका भेद बता दिया एवं विष्णु जी चक्र से उसका गर्दन काटा तब क्रोधित हुआ राहु चन्द्रमा को मारने पहुंचा। चन्द्रमा तब तक समाधि में बैठे महादेव के शीश पर जाकर बैठ गया। पीछा करते आया राहु महादेव से कहने लगा कि चन्द्रमा को शीश से उतार दें। महादेव ने आंखें खोली । नजर चन्द्रमा पर पड़ी और उनके नेत्रों की ज्योति चन्द्रमा में समाहित हो गई। चन्द्रमा के लोक हित के कार्यों से प्रसन्न महादेव ने राहु की बात नहीं मानी। तब से चन्द्रमा महादेव के शीश पर बैठकर शीतलता बांट रहा है। बातचीत के क्रम में डॉ योगानन्द गिरि ने बताया कि आधुनिक ढंग से स्तंभों तथा गर्भगृह पर प्रकाश की भी व्यवस्था की जाएगी। इस प्रकार मन्दिर के आभामंडल से तन–मन को बेहतर करने का भी उपाय किया जा रहा है।

विकास खंड स्तरीय रोजगार मेले में विधायक ने अभ्यर्थियो को वितरित किया आफर लेटर

संवाददाता।

मीरजापुर । दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना अंतर्गत उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन, राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान व जिला सेवायोजन कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विकास खंड स्तरीय रोजगार मेला का आयोजन हलिया ब्लाक में स्थित पंचशील डिग्री कालेज मवई कलां हलिया मीरजापुर के प्रागंण में किया गया।

मुख्य अतिथि विधायक छानबे श्रीमती रिंकी कोल द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर मेला का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर राजकीय आईटीआई प्रधानाचार्य छानबे आलोक कुमार द्वारा मुख्य अतिथि को पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया।

हिन्दी दैनिक विजडम इंडिया
स्वामी,मुद्रक एवं प्रकाशक श्री शील कुमार शुक्ला द्वारा हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0 ,94, एम0जी0 मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से छपवाकर 633/387,गेहमर कुंज कालोनी, फैजाबाद रोड, चिनहट, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।
सम्पादक–शील कुमार शुक्ला
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।